रेल राजभाषा

अंक 134, जुलाई-सितम्बर, 2023

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) नई दिल्ली

त्रैमासिक पत्रिका

रेल राजभाषा

वर्ष: 2023 अंक: 134 जुलाई-सितम्बर, 2023

संरक्षक
श्री अनिल कुमार लाहोटी अध्यक्ष
एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी,
रेलवे बोर्ड

परामर्शदाता
मोहित सिन्हा
महानिदेशक
(मानव संसाधन)

मार्गदर्शक
दीपक पीटर गेब्रियल
प्रधान कार्यपालक निदेशक
(औद्योगिक संबंध)

सलाहकार
सुधीर कुमार
कार्यपालक निदेशक
(स्थापना सामान्य)

प्रधान संपादक
डॉ. बरुण कुमार
निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

संपादक
रिसाल सिंह
संयुक्त निदेशक, राजभाषा

सहायक संपादक
शशि बाला
सहायक निदेशक,
राजभाषा (पत्रिका)

संपादन सहयोग
जितेन्द्र प्रधान
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पता:-
राजभाषा निदेशालय
रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)
नई दिल्ली-110001
ई-मेल:
patrikahindi@gmail.com

इस अंक में

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ
1.	हिंदी भाषा और साहित्य में स्वतंत्रता-संग्राम के स्वर	डॉ. बरुण कुमार	04
2.	प्रवासी	मु. तनवीर खान	08
3.	बाबाजी का भोग	मुंशी प्रेमचंद (संकलन)	09
4.	मेरा देश जवान हो गया	श्री अभिषेक श्रीवास्तव	10
5.	आज की नारी	श्रीमती रश्मि दहिया	11
6.	प्यार की डोर	डॉ. कविता विकास	12
7.	अतीत से वर्तमान, हिंदी साहित्य का संसार	श्री राम प्रजापति	15
8.	रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 147वीं बैठक की झलकियां		16
9.	"हिंदी और वर्तनी (शुद्ध हिंदी कैसे लिखें)" विषय पर आयोजित कार्यशाला की झलकियां		17
10.	इरिमी जमालपुर में अखिल रेल हिंदी निबंध, हिंदी वाक् तथा हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन		18
11.	मुंशी प्रेमचंद एवं शिवपूजन सहाय की जयंती एवं प्रदर्शनी का आयोजन		22
12.	झांसी की रानी का अभागा पुत्र दामोदर राव	श्री विनीत कुमार	24
13.	आभासी दुनियां	श्री कमलेश कुमार झा	28
14.	शहरों में कैद बचपन	श्री गौरव जारेड़ा	30
15.	दक्षिण के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी	श्री सुशील सक्सेना	31
16.	डॉ. बिंदेश्वर पाठक- टॉयलेट क्रांति के जनक	संकलन	35
17.	जिंदगी	श्री सतविंदर सिंह	37
18.	हिमालय	रामधारी सिंह 'दिनकर'	38

सम्पादकीय

'रेल राजभाषा' का 134वाँ अंक ई-संस्करण के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है आपके लिए यह रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगा। इसमें अलग-अलग विषयों पर लेख, कहानी, कविता आदि के साथ-साथ अन्य विषय संकलित हैं। साथ ही, इसमें राजभाषा संबंधी विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ भी दी गई हैं।

सतहत्तर साल मानवता के इतिहास में कोई बड़ी अवधि नहीं होती हो, लेकिन एक देश के इतिहास के लिए यह महत्वपूर्ण अवधि है। अभी हम अपने देश की आजादी के सतहत्तर वर्ष पूरे होने का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। पीछे मुड़कर देख रहे हैं कि हम किन राहों पर चले। हमारी आजादी का संघर्ष कई मामलों में विलक्षण था। वह दुनियाँ के अन्य औपनिवेशिक देशों की तरह केवल एक विदेशी सत्ता से छुटकारा पाने का संघर्ष नहीं था, बल्कि इसके साथ वह स्वयं अपनी आर्थिक-सामाजिक-सांस्कृतिक जैसी कितनी ही रूढ़ियों, बेड़ियों और अन्यायों से मुक्ति का संघर्ष भी था। इन संघर्षों को साहित्य ने बड़ी आंतरिकता और निष्ठा से अभिव्यक्ति दी है। आखिर साहित्य समाज का दर्पण भी तो है। हमारा स्वतंत्रता संग्राम जितना बाहरी शक्तियों से था उतना आंतरिक कमियों और कमजोरियों के खिलाफ भी था। एक बाहरी शक्ति से तो हमने १५ अगस्त १९४७ को ही स्वतंत्रता पा ली थी, लेकिन हमारी आंतरिक कमियों और कमजोरियों से छुटकारे का संघर्ष अभी जारी है। आज भी हमारा साहित्य हमारे संघर्षों को - हमारी उपलब्धियों और खुशियों को भी - व्यक्त कर रहा है।

लेकिन, भारत की विकास-यात्रा का रथ जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा है एक और संघर्ष हमारे बीच दिनोंदिन गहराता जा रहा है। यह संघर्ष नया तो नहीं है लेकिन पहले इसकी तीव्रता और फैलाव कम थे। यह संघर्ष है पश्चिम और पूर्व का। यह देखकर आश्चर्य ही होता है कि राजनैतिक रूप से पश्चिम के अधीन रहते हुए भारत मानसिक रूप से पश्चिम से उतना आक्रांत नहीं था जितना कि वह स्वतंत्र होने के बाद क्रमशः हो चला है। पहले हम पश्चिम से जीवन-मूल्य ही आयात करते थे, अब तो हम खान-पान, कपड़े, रहन-सहन, बोली, लहजा सब कुछ आयात कर रहे हैं। अब कहीं हमारे मन में यह स्थापित हो गया है कि प्रगति का अर्थ ही है पश्चिम जैसा हो जाना। परिणामस्वरूप, हिंदी का, और अन्य भारतीय भाषाओं का भी, तेजी से पश्चिमीकरण हो रहा है। अब हम अपनी बोली और लहजा, शिष्टाचार के अभिवादन तक तेजी से बदले दे रहे हैं तो देशी भाषाओं के लिए कोई राहत का तर्क कहाँ से मिल सकता है। साहित्य का शरीर और आत्मा भी है भाषा। भाषा भी बदल गई तो अर्थ को – हमारे भावों को – आश्रय देनेवाला साहित्य कहाँ रहेगा। उदारीकरण के बाद हुई आर्थिक प्रगति ने हमें दुनियाँ के साथ प्रतियोगिता करने का हौसला दिया है। आर्थिक प्रगति ने बहुत सारे आत्मविश्वास भी उत्पन्न किए हैं। विकसित भारत होगा इसका हमें विश्वास हो चला है लेकिन उसके चेहरे में 'भारत' कितना होगा इसकी भी चिंता करने की जरूरत है।

सितम्बर में 'हिंदी दिवस' पड़ता है। प्रत्येक वर्ष इस महत्वपूर्ण अवसर पर देश की भाषा, साभार की भाषा एवं उसके अपने देश-समाज और विश्व में स्थिति पर वैचारिक मंथन चलता है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। इस दृष्टि से आगामी अंक के लिए आपके लेख, कविताएं, कहानियाँ, संस्मरण, गतिविधियों की रिपोर्ट आदि प्रकाशनार्थ आमंत्रित किए जाते हैं।

(डॉ. बरुण कुमार)
निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

हिंदी भाषा और साहित्य में स्वतंत्रता-संग्राम के स्वर

अभी हम अपनी आजादी के सतहत्तर साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। सतत्तर साल की अवधि भारत जैसी प्राचीन और बड़ी सभ्यता के इतिहास में कोई बड़ी अवधि नहीं होती, लेकिन किसी विदेशी दासता से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए निश्चय ही एक महत्वपूर्ण अवधि है।

यह देश कई सदियों तक विदेशी सत्ता के अधीन रहा, परंतु इसके सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक-नैतिक स्वरूप पर जो आघात दो सौ वर्षों की अंग्रेजों की दासता ने दिए और जो आलोड़न पैदा किया वह अभूतपूर्व है।

अंग्रेज यहाँ व्यापारी बनकर आए, धीरे धीरे यहाँ के शासक बन बैठे। दो सदी तक शासन करके भी यहाँ की मिट्टी से जुड़े नहीं। अंग्रेजों का इस देश से संबंध सिर्फ शासक-शासित और शोषक-शोषित का ही रहा। उनके पूर्व इस्लामी आक्रांता भी आए थे, लेकिन बाबर-हुमायूँ की संतानें यहीं की होकर रह गईं। अंग्रेजों ने यहाँ के उद्योग, यहाँ के व्यापार को तहस-नहस किया और जबरदस्त लूट मचाई। ईस्ट इंडिया कंपनी के अत्याचारों का विरोध तो १७६० में ही प्रारंभ हो गया था - मीर कासिम के नेतृत्व में मुर्शिदाबाद के बुनकरों की बगावत, मैसूर में टीपू सुल्तान और कर्नाटक में कितुर की राजकुमारी का विद्रोह। १७७३ में हजारों किसान अंग्रेजों के विरोध में खड़े हुए थे। बहावी विद्रोह तथा मराठा प्रतिरोध भी हुए। सन् १८५७ में इन विद्रोहों के जनाक्रोश की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई।

१८५७ की क्रांति जैसे स्वातंत्र्य आंदोलन में, वैसे ही भारतीय साहित्य में भी एक मोड़ की तरह आता है। इसके प्रभाव से नवजागरण की अवधारणा उत्पन्न हुई। लगभग सभी भारतीय भाषाओं में आधुनिक युग का सूत्रपात हुआ। **तमिल** में रामलिंगम स्वामिगल, सुब्रह्मण्यम भारती; **तेलुगु** में वीरेशलिंगम; **कन्नड़** में श्री कण्ठैया, शंकर भट्ट; **मलयालम** में केरल वर्मा, वेनमणि आदि; **गुजराती** में नर्मद आदि; बांग्ला में ईश्वर गुप्त, मधुसूदन दत्त आदि; **असमिया-उड़िया** के अन्यान्य

कविगण- इन सबने भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्रांति को अपने काव्य में वाणी दी।

हिंदी और उर्दू दोनों सगी बहनें हैं। उर्दू ने भी हिंदुस्तान की जंग-ए-आज़ादी में भारत की आज़ादी की लड़ाई में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महात्मा गांधी तो अंग्रेज़ों से छिपाने के लिए महत्वपूर्ण सूचनाएँ उर्दू में ही भेजा करते थे। १८५७ विद्रोह के अमानवीय दमन की मुखालफत उर्दू अख़बारों ने बढ़-चढ़कर की थी। मौलाना हसरत मोहानी का 'उर्दू-ए-मुअल्ला', मुंशी सज्जाद हुसैन का 'अवध पंज', मौलाना मुहम्मद अली जौहर का 'कामरेड' और 'हमदर्द', मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का 'अल-हिलाल' और 'अल-बलाग़', ज़फ़र अली ख़ान का 'ज़मीनदार' आदि इनमें प्रमुख हैं। उर्दू शायरी में बगावत के तेवर बढ़-चढ़कर अभिव्यक्त हो रहे थे। मौलाना शिबली ने **१९३० में** कहा था -

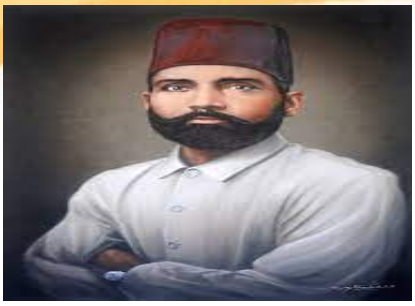

"ये माना तुमको तलवारों की
तेजी आजमानी है,
हमारी गर्दनों पर होगा उसका
इम्तहाँ कब तक?"
ये माना गर्मी-ए-महफिल के
सामाँ चाहिए तुमको,
दिखाएं हम तुम्हें हंगामा-ए-आहो
फुगाँ कब तक?"

मौलाना जफर अली खान- ('वीर भारत' दैनिक, २ मार्च १९३०)

"जितनी बूंदें थीं शहीदाने वतन के खून की
कसे आजादी की आराइश का सामाँ हो गईं"

** ** **

"जिंदगी उनकी है, दीन उनका है, दुनिया उनकी है,
जिनकी जानें क़ौम की इज्जत पे कुर्बां हो गईं।"

और अल्-लामा-इक़बाल ने तो १९०५ में ही वह मशहूर तराना लिखा था - **"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।"** १९५० के दशक में सितार-वादक पण्डित रविशंकर ने इसे सुरों में बांधा था। जब इंदिरा गांधी ने भारत के प्रथम अंतरिक्षयात्री राकेश शर्मा से पूछा कि अंतरिक्ष से भारत कैसा दिखता है, तो शर्मा ने इसी गीत को उद्धृत किया था।

<u>हिंदी भाषा एवं साहित्य तथा स्वाधीनता संग्रामः</u> हिंदी भाषा ने स्वाधीनता संग्राम में और देश की एकता में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी भाषा और साहित्य में विदेशी शासन की लूट, उसके संप्रदाय, धर्म, जाति के झगड़े फैलाने की कोशिशों की खुलकर भर्त्सना हुई। हिंदी क्रांतिकारियों एवं राष्ट्र भक्तों के हृदय के उद्गार की भाषा थी।

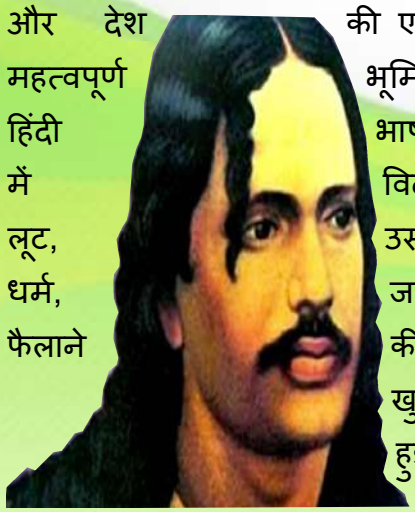

हिंदी में स्वतंत्रता के स्वरों की सबसे प्रबल अभिव्यक्ति भारतेंदु के साहित्य में मिलती है। भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने देश की दुरवस्था पर दुख प्रकट करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत की भी याद दिलाई। वहीं दूसरी ओर उन्होंने अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र अंग्रेजों की शोषण नीति पर क्षोभ प्रकट करते हुए वे लिखते हैं -

"अंग्रेज राज सुख साज सजै सब भारी
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।"

** ** **

भीतर भीतर सब रस चूसै, हँसि हँसि के तन मन धन मूसै।
जाहिर बातिन में अति तेज, का सखि साजन, नहिं अंगरेज।

कभी **"रानी विक्टोरिया, अमिय की कटोरिया"** कहने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र का ऐसा मोहभंग हुआ कि वे कहने लगे -

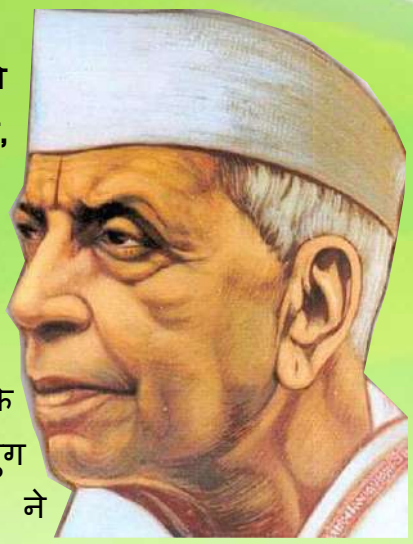

आवहु सब मिलि रोवहु भारत भाई, हा हा भारत दुर्दशा देखी न जाई।

भारतेंदु के बाद द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने भी स्वाधीनता संग्राम में अपनी लेखनी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने के उद्देश्य से रचनाएँ कीं। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' प्रसिद्ध है। वे

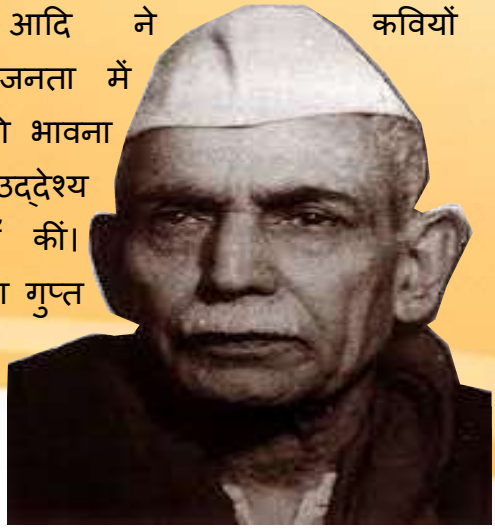

देशवासियों को उनके स्वर्णिम अतीत की याद दिलाकर अपना वर्तमान और भविष्य को सुधारने का आह्वान करते हुए कहते हैं -

हम क्या थे, क्या हैं, और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें मिलकर यह समस्याएँ सभी।

माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी प्रसिद्ध कविता में एक 'पुष्प की अभिलाषा' को व्यक्त करते हुए कहा -

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

सुभद्रा कुमारी चौहान के स्वरों में जैसा ओज, वीरता और ललकार है वैसा तो पुरुष कवियों में भी दुर्लभ है -

है उदधि गरजता बार बार, आ रही हिमाचल से पुकार

सब पूछ रहे हैं दिग दिगंत, वीरों का हो कैसा वसंत?

** ** **

चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी

बुंदेले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।

छायावादी काव्यधारा में स्वाधीनता

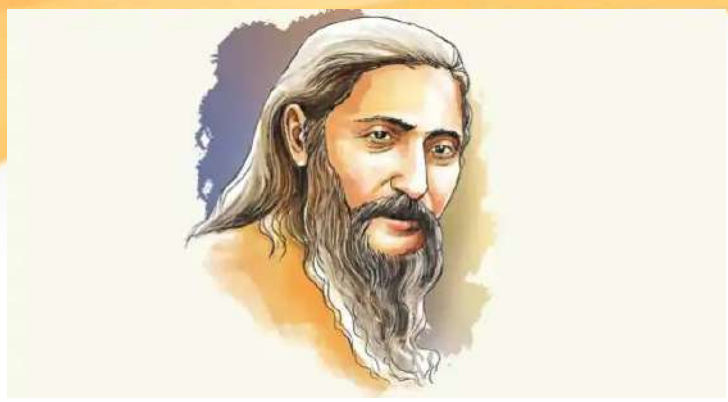

संग्राम का समर्थन हुआ है। छायावादी रचनाकारों ने अंग्रेजी शासन की सीधी सीधी निंदा-आलोचना की जगह राष्ट्र की आत्मा को ही जागृत करने का प्रयास किया। उन्होंने भारत के स्वर्णिम अतीत का गौरव गायन किया। यह पहले भी हो रहा था लेकिन यहाँ यह मुख्य भाव के रूप में उपस्थित है। छायावाद का काल दो महायुद्धों के बीच १९१८ से १९३६ तक माना जाता है। हिंदी कविता अपने उत्कर्ष पर यहाँ नजर आती है। प्रसाद जी का ***'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती'*** असाधारण गीत है जो वैसे तो चंद्रगुप्त नाटक में अलका सैनिकों के आह्वान में गाती है लेकिन

उसकी चोट का लक्ष्य तत्कालीन विदेशी शासन भी है। प्रसाद जी ने 'अशोक की चिंता', 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण', 'पेशोला की प्रतिध्वनि', तथा 'प्रलय की छाया' वगैरह कविताओं में भारत के राजनैतिक पराभव की अभिव्यक्ति की तो 'अशोक की चिंता' और 'अरी ओ वरुणा की शांत कछार' में आदि में राष्ट्र के गौरव को वाणी दी। प्रसाद तो अपनी प्रकृति प्रेम की कविताओं में भी राष्ट्र-जागरण का संदेश देते हैं -

'बीती विभावरी जाग री!

... ...

तू अब तक सोई है आली, आंखों में भरे विहाग री!"

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की **'तुलसीदास'** भारत के सांस्कृतिक सूर्य के अस्त होने के चित्रित करती है। **'राम की शक्ति पूजा'** में संघर्ष के लिए शक्ति का आह्वान है। **'जागो फिर एक बार'** कविता में निरालाजी वीर शिवाजी, राणा प्रताप, गुरु गोविंद सिंह जैसे राष्ट्र नायकों के माध्यम से भारत की संपूर्ण सांस्कृतिक विरासत का यशोगान करते हैं।

<u>स्वाधीनता संग्राम एवं साहित्यिक पत्रकारिता</u> : स्वाधीनता संग्राम को गति देने का कार्य साहित्यिक पत्रिकाओं ने भी बढ़-चढ़कर किया। बाल गंगाधर तिलक के 'मराठा', 'केसरी', 'सुधारक' समाचार पत्रों ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अलख जगाई। महात्मा गांधी द्वारा संपादित पत्र-पत्रिकाओं ने आम आदमी को संघर्ष में उतारने का काम किया। इसी तरह 'ग़दर', 'बंगदूत', 'प्रजा मित्र',

'हरिश्चंद्र मैगजीन', 'प्रताप विशाल', 'भारत', 'कर्नाटक वृत्त', 'कर्मवीर', 'चंद्रोदय', 'विजय', 'आज समाज' आदि पत्रिकाओं ने जन आंदोलन को तीव्र गति प्रदान की।

साहित्य और पत्रकारिता का अटूट गठबंधन भारतेंदु युग से ही दिखाई पड़ता है। इस युग के साहित्यकार अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने के लिए साहित्य-रचना के साथ-साथ समसामयिक विषयों पर समाज का मार्ग प्रशस्त करते दिखाई पड़ते हैं। राष्ट्रप्रेम एवं समाज सुधार इस पत्रकारिता के अहम हिस्से थे। इस पत्रकारिता ने समाज में नई चेतना जगाने और स्वाधीनता संग्राम को आगे ले जाने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उनकी गौरव गाथा हमें प्रेरणा देती है कि हम स्वतंत्रता के मूल्य को बनाये रखने के लिए कृत संकल्प रहें।

समाहार - हिंदी साहित्य ने अपने आधुनिक काल में स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक जनता के दुख-दर्दों, उसकी पीड़ाओं-खुशियों, विडम्बनाओं-उपलब्धियों को वाणी दी है। आज भारत विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर है। लेकिन इसके साथ पूरी भारतीय सभ्यता का जिस तेजी से पश्चिमीकरण हो रहा है उससे हिंदी समेत सभी भाषाओं पर एक नया संकट उपस्थित हो गया है। अंग्रेजी न केवल समस्त भारतीय भाषाओं को ज्ञान और चिंतन के गंभीर क्षेत्रों से बेदखल करती जा रही है बल्कि इनके शब्द-भंडार को रिक्त करती हुई अंग्रेजी शब्दों और पदावलियों से भर रही है। शब्द भाषा के प्राण होते हैं। उन्हें खोकर भाषा का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा। प्रगति और विकास की दौड़ में हमें ठहरकर भारत की हजारों वर्षों की सभ्यता के मूल्यवान तत्वों को- जिनमें भाषा सर्वप्रमुख है- भी बचाने की जरूरत है।

-डॉ. बरुण कुमार
निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

कविता

प्रवासी

दिल के ज़ख्मों को हाथों पे सजा रखा है,
ग़ौर से देख तो सही, सामने ये क्या रखा है।
कैसी जुस्तजू में फंसे हैं हम, पता नहीं, ये अश्क
सिर्फ कतरे हैं, समंदर तो अंदर छुपा रखा है।

याद तो आता है बहुत मगर हम करें तो करें क्या,
मानों जैसे किसी ने हम पर पहरा बैठा रखा है।
इस भाग दौड़ में, हमेशा के लिए छूट तो गया,
मगर मैंने उस शहर को आंखों में बसा रखा है।

लौट के जब हम घर आये तो छलक उठा,
हां वही समंदर जो आंखों में छिपा रखा है।
माँ को भी अपनी मेहनत पर रोना आता है,
आखिर क्यों बच्चों को उड़ना सिखा रखा है।
घर में होकर भी मोबाइल में लोग मस्त रहते हैं,

अनजाने में ही सही मगर
अपनों से एक फासला बना रखा है।
पास हों या दूर, बरकार रहे आपस की ये मुहब्बत,
मुहब्बत के सिवा इस दुनियाँ में और क्या रखा है।

मुहम्मद तनवीर खान
संयुक्त निदेशक (गतिशक्ति/सिविल)
रेल मंत्रालय

बाबाजी का भोज

प्रेमचंद

रामधन अहीर के द्वार एक साधू आकर बोला- बच्चा तेरा कल्याण हो, कुछ साधू पर श्रद्धा कर।

रामधन ने जाकर स्त्री से कहा- साधू द्वार पर आए हैं, उन्हें कुछ दे दे।

स्त्री बरतन माँज रही थी और इस घोर चिंता में मग्न थी कि आज भोजन क्या बनेगा, घर में अनाज का एक दाना भी न था। चैत का महीना था, किन्तु यहाँ दोपहर ही को अंधकार छा गया था। उपज सारी की सारी खलिहान से उठ गई। आधी महाजन ने ले ली, आधी जमींदार के प्यादों ने वसूल की, भूसा बेचा तो व्यापारी से गला छूटा, बस थोड़ी-सी

गाँठ अपने हिस्से में आई। उसी को पीट-पीटकर एक मन भर दाना निकला था। किसी तरह चैत का महीना पार हुआ। अब आगे क्या होगा। क्या बैल खाएँगे, क्या घर के प्राणी खाएँगे, यह ईश्वर ही जाने। पर द्वार पर साधू आ गया है, उसे निराश कैसे लौटाएँ, अपने दिल में क्या कहेगा।

स्त्री ने कहा- क्या दे दूँ, कुछ तो रहा नहीं। रामधन- जा, देख तो मटके में, कुछ आटा-वाटा मिल जाए तो ले आ।

स्त्री ने कहा- मटके झाड़ पोंछकर तो कल ही चूल्हा जला था, क्या उसमें बरकत होगी? रामधन- तो मुझसे तो यह न कहा जाएगा कि बाबा घर में कुछ नहीं है किसी और के घर से माँग ला।

स्त्री- जिससे लिया उसे देने की नौबत नहीं आई, अब और किस मुँह से माँगू? रामधन- देवताओं के लिए

कुछ अगोवा निकाला है न वही ला, दे आऊँ।

स्त्री- देवताओं की पूजा कहाँ से होगी?

रामधन- देवता माँगने तो नहीं आते? समाई होगी करना, न समाई हो न करना। स्त्री- अरे तो कुछ अँगोवा भी पँसरी दो पँसरी है? बहुत होगा तो आध सेर। इसके बाद क्या फिर कोई साधू न आएगा।

उसे तो जवाब देना ही पड़ेगा। रामधन- यह बला तो टलेगी फिर देखी जाएगी। स्त्री झुँझला कर उठी और एक छोटी-सी हाँडी उठा लाई, जिसमें मुश्किल से आध सेर आटा था। वह गेहूँ का आटा बड़े यत्न से देवताओं के लिए रखा हुआ था। रामधन कुछ देर खड़ा सोचता रहा, तब आटा एक कटोरे में रखकर बाहर आया और साधू की झोली में डाल दिया।

महात्मा ने आटा लेकर कहा- बच्चा, अब तो साधू आज यहीं रमेंगे। कुछ थोड़ी- सी दाल दे तो साधू का भोग लग जाए।

रामधन ने फिर आकर स्त्री से कहा। संयोग से दाल घर में थी। रामधन ने दाल, नमक, उपले जुटा दिए। फिर कुएँ से पानी खींच लाया। साधू ने बड़ी विधि से बाटियाँ बनाईं, दाल पकाई और आलू झोली में से निकालकर भुरता बनाया। जब सब सामग्री

तैयार हो गई तो रामधन से बोले बच्चा, भगवान के भोग के लिए कौड़ी भर घी चाहिए। रसोई पवित्र न होगी तो भोग कैसे लगेगा?

रामधन- बाबाजी घी तो घर में न होगा। साधू- बच्चा भगवान का दिया तेरे पास बहुत है। ऐसी बातें न कह।

रामधन- महाराज, मेरे गाय-भैंस कुछ भी नहीं है।

'जाकर मालकिन से कहो तो?' रामधन ने जाकर स्त्री से कहा- घी माँगते हैं, माँगने को

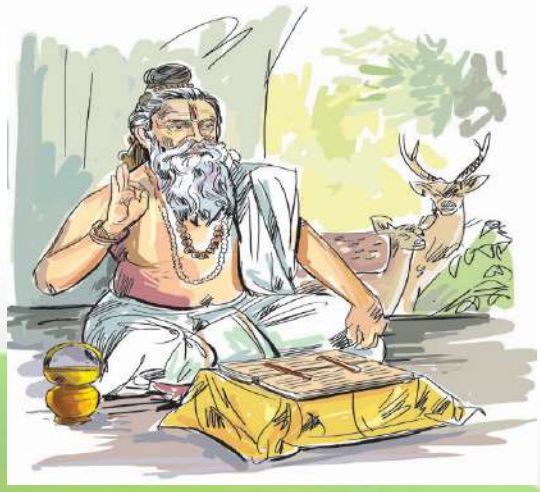

भीख, पर घी बिना कौर नहीं धंसता। स्त्री- तो इसी दाल में से थोड़ी लेकर बनिए के यहाँ से ला दो। जब सब किया है तो इतने के लिए उन्हें नाराज करते हो।

घी आ गया। साधूजी ने ठाकुरजी की पिंडी निकाली, घंटी बजाई और भोग लगाने बैठे। खूब तनकर खाया, फिर पेट पर हाथ फेरते हुए द्वार पर लेट गए। थाली, बटली और कलछुली रामधन घर में माँजने के लिए उठा ले गया। उस दिन रामधन के घर चूल्हा नहीं जला। खाली दाल पकाकर ही पी ली। रामधन लेटा, तो सोच रहा था- मुझसे तो यही अच्छे!

***

कविता

मेरा देश जवान हो गया

मेरा देश जवान हो गया
भारत देश छिहत्तर वर्ष का हो गया।
मेरा देश बुढा नही जवान हो गया।
प्राणघातक दंशो को मुस्कराते झेल गया।
पुराने ज़ख्मों पर मरहम लगाता गया।
औषधि बनाकर विश्व संरक्षक बन गया,
मेरा देश जवान हो गया।
इसने देखा अन्तरिक्ष में मंगलयान का प्रक्षेपण।
बनारस की गंगाजल का शिव को अर्पण।
विलुप्त हुए चीतों का कुनो में पदार्पण।
दहशतगर्दो का कानून को आत्मसमर्पण।
प्रगति के पथ पर भारत अग्रसर हो गया,
मेरा देश जवान हो गया।
विश्वप्रमुख फर्मों के प्रमुख भारतीय हैं।
विश्व का सबसे धनी मानुष भारतीय हैं।
विश्व की सबसे ऊंची मूरत भारतीय हैं।
विश्व की सांस्कृतिक सूरत भारतीय हैं।
विश्व में भारत का डंका बज गया,
मेरा देश जवान हो गया।
सिनेमा में बॉलीवुड चमक दिखा रहा हैं।
व्यापार में शिपयार्ड धमक दिखा रहा हैं।
पर्यटन भी नयी पुरानी दमक दिखा रहा हैं।
संगीत में सुरों की खनक दिखा रहा हैं।
प्रत्येक विधायों में और भी प्रखर हो गया,
मेरा देश जवान हो गया।
चालू पड़ोसी के लिए फ़ौलादी अस्त्र से,
दुलार में भरपूर सम्मान करे अंगवस्त्र से,
विख्यात मंदिरों में पूजित धर्मशास्त्र से,
और दुश्मनों के छक्के छुड़ाए ब्रम्हास्त्र से,
वसुधैव कुटुम्बकम का सार गुंजित हो गया।
मेरा देश जवान हो गया।

अभिषेक श्रीवास्तव
जूनियर इंजीनियर, विद्युत् लोको शेड, झाँसी

कविता

आज की नारी

यह आज की नारी है, ईश्वर की
सबसे सुंदर कृति, ये सुंदरा बाली है,
ये कोमल है, यह मृदुला है,
ये पुलकित, सौंदर्या, ललिता है,
तो वही यह यशिस्वनी, सबल,
दिव्य, प्रखर, अव्यन्ना है।

चिर-परिचित इतिहास है इसका,
यह दुर्गा, लक्ष्मी, काली है,
महान पन्ना, पदमावत,
रज़िया, लक्ष्मीबाई मर्दानी है।
बलिदानी बन, पति संग,
नेत्रहीन हुई जो वो गांधारी है,
जो जिद पर आ जाए,
तो ये
सावित्री यमराज पर भी
भारी है।

समुद्र की गहराइयों से
ले
क्षर-क्षितिज तक लांघ
डाली है,
खेल, कला, ज्ञान,
अनुसंधान,
प्रशासन, सबमें क्षमता
शाली है,
नारी को अबला कहने
वालो,
यह अबला अब सीमाओं की रखवाली है,
टैंक, जहाज, युद्ध पोत चलाती,
यह कोमल मृदुला अब बन गई क्षत्राणी है।

अब ये वो द्रोंपदी नहीं, जो
दांव पर लगाई जाती है,
अब ये वो पदमावत नहीं, जो
सम्मान रक्षा के लिए जौहर कर जाती है।
अब ये वो प्रतिभा पाटिल और द्रौंपदी मुर्मु है,
जो शिखर पद को सुशोभित कर
सशस्त्र सेनाओं की सलामी पाती है।।

नर-नारी है एक समान, सुन
सबकी भृकुटी तन जाती हो!
सच ही तो है, नारी तुम स्वयं को
कहां नर से तुल्य पाती हो?

नारी तुम तो नर समाज से भी
ऊंचे ओहदे पर पाई जाती हो।
प्रश्न मेरा है, क्या नारी तुम
कभी पुरुष बन पाओगी,
क्या बन धर्मराज, कभी अपने
पति को जुए में दांव लगाओगी,
क्या बन कर कठोर, पर प्रतिष्ठा,
को छिन्न-भिन्न कर पाओगी,
क्या विश्वासघाती आफताब बन
श्रद्धा के टुकड़े कर मुस्का पाओगी

हे जन समाज,
जब ये दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा की
खबरें सुनाई जाती है,
तब देश की संस्कारशीलता,
न्याय व्यवस्था धूमिल हो
जाती है,
उसे सशक्तीकरण की चाह
नहीं,
जो स्वयं शक्ति कहलाती है,
ये शक्ति तो इस जन समाज
से
बस ये आस लगाती है:
चाह नहीं मुझे आरक्षण की,
बस उचित सम्मान दिला दो
तुम,
निकल सकूं निडर अड़िग
अंधियारे में भी,
ऐसा सुरक्षित समाज बना दो तुम,
न रोको तुम, न छेड़ो तुम,
ना ही मुझको घूरो तुम,
एक पुरुष को मर्द से पहले
अच्छा इंसान बना दो तुम,
पंख सशक्त हैं, हौंसले बुलंद हैं,
बस खुला आसमान दिला दो तुम,
सपने सच कर पाए हर बेटी,
आजादी के अमृत महोत्सव में

ये स्वाभिमान दिला तो तुम।

रश्मि दहिया
(अनुभाग अधिकारी)
रेलवे बोर्ड

प्यार की डोर

आज ये पाँचवीं मर्तबा है, जब माँ ने फ़ोन नहीं उठाया। ऐसे तो हर दिन एक निश्चित समय पर माँ का फ़ोन आता था। जिस दिन मैं नहीं उठाती, दूसरे दिन उलाहना देतीं, "चाहे जितना भी व्यस्त रहो, ढाई बजे दिन का समय मेरे लिए रखना।" उन्हें पता था उस समय तक लंच वग़ैरह निबटा कर मैं आराम कर रही होती थी। अब थोड़ा डर भी लग रहा था कि पंद्रह दिन होने को आए, न इधर से कोई बात न उधर से कोई बात हो रही है। पापा को फ़ोन लगाया लेकिन स्ट्रोक के बाद वो ज़्यादा बोलते नहीं थे और जो भी लड़खड़ाती बोली में बोलते, वह समझ में भी नहीं आता। जब महरी को फ़ोन लगाया जो वर्षों से वहाँ काम कर रही थी, तो उसने कहा, "हाँ मोबाइल की घंटी तो बजती है और मोबाइल माँ के हाथों में ही रहता है। पता नहीं वो क्यों नहीं बात करतीं हैं?"

मुझे कुछ अपशगुन की आशंका हुई तो तीन दिन के लिए माँ के पास चली गयी।

बच्चों के आने से अथक ख़ुशी के भाव से सराबोर रहने वाली माँ ने ऐसे स्वागत किया जैसे मेरे आने न आने से कोई फ़र्क़ ही नहीं पड़ता हो उन्हें। घर में केवल माँ - पापा थे। भाई- भाभी तो सालों से विदेश में बस गए थे। बीच-बीच में आते भी थे तो भाभी के आत्मकेंद्रित और रुखे व्यवहार से कुछेक दिन में ही उल्लास खोने लग जाते थे। यह तो उनके पोते बंटू का मोह था, जो उन्हें उनके आने का इंतज़ार करवाता था। साथ में नौ महीने की एक प्यारी सी गुड़िया जिसका जन्म दुबई में ही हुआ था। पिछले साल बंटू का तीसरा जन्मदिन यहीं मनाया गया था। उसे भी बहुत मन लगता पापा- माँ के साथ।

पापा एक कुर्सी पर बैठे रहते, उनकी देख-रेख के लिए एक अटेंडेंट था जो उनके नित्य कामों को करवा कर, नहला-धुला कर कपड़े बदल देता। फिर माँ अपने हाथों से बना नाश्ता उन्हें करातीं। जब माँ दूसरे कामों में व्यस्त होतीं, तब बंटू ही पापा के साथ रहता, उनके छोटे-मोटे काम कर देता, मसलन, टीवी ऑन कर देना, पेपर, चश्मा आदि ला देना आदि। पापा अपने काँपते हाथों से उसे लेकर गोद में बैठा लेते। जब भाभी उसे खींच कर उतार लेती और अपने साथ ले जाने लगती, तो वह बड़ी कातर निगाहों से पापा को देखता।

माँ के बग़ल में सोने का सुख आज भी वैसा ही है, जैसा बचपन में था। लेकिन अब माँ की यह चुप्पी बहुत खल रही है। इत्मिनान से सो रही माँ को देख कर खटका

हो रहा था। वह पापा की साया थीं। डायबीटिज और स्ट्रोक के बाद भी पिछले बाइस साल से पापा जीवित हैं तो सिर्फ़ माँ के कुशल देख-रेख के कारण ही। मुझे याद है, हमारे छुटपन में पापा कहते थे "घर की रानी है तुम्हारी माँ, उनके आदेश के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता।"

लेकिन माँ, पारम्परिक, सरल और घरेलू ही रहीं, भले ही अदृश्य रूप से पूरे घर को कमाँड करती रहीं। तीज-त्योहारों में पापा के पैर छूतीं। एक उम्र के बाद तो उन दोनों में हमें भगवान और भक्त का रिश्ता दिखने लगा था। भाई के प्रति पापा की चिंता देख कर उन्हें समझातीं, "पढ़ा-लिखा दिया, अच्छे संस्कार दिए, फिर भी नहीं समझ है तो आप क्या कर लीजिएगा? ख़ुश रहिए। मैं आपका पूरा ख़याल रखूँगी।" दो साल पहले मशीन की तरह चलती रहने वाली माँ को ऐसी कमज़ोरी महसूस होने लगी कि गुलाब सी खिली-खिली माँ महीने भर में कुम्हला गयीं। बोन कैंसर का चौथा स्टेज। घर पर मानो वज्रपात हो गया हो। दवा के बल पर जितने दिन हो सकता था चलतीं रहीं। अपने लिए नहीं अब वह पापा के लिए जी रहीं थीं। पूरे घर को अपनी सकारात्मकता से ऊर्जस्वित करने वाली माँ अकेले में रोने लगतीं। पापा भी रोते, पर माँ के सामने हिम्मती बनने का नाटक करते।

अभी मैं इन ख़यालों से गुज़र रही थी कि माँ के बड़बड़ाने की आवाज़ सुनी "हे ईश्वर, मेरे देवता को मुझसे पहले उठा ले, मेरे बाद उनको कौन देखेगा" सरकारी नौकरी के उच्च पद से सेवा निवृत पापा आराम पसंद ज़िंदगी जीते थे। बहू के साथ रहना नहीं चाहेंगे, महरी, महरी ही होती है। बस माँ की इस बड़बड़ाहट ने उनकी उदासीनता के राज खोल दिए। अपने जीवन की अनिश्चितता से ज़्यादा पापा की चिंता ने उन्हें मौन कर दिया था। ऐसा लगता था कि हम सब से वो मोह-माया त्याग रही हों। सब कुछ देख-समझ कर, उन दोनों को समझा कर मैं अपने शहर आ गयी।

ज़िंदगी अपनी पटरी पर लौटती उसके पहले ही माँ के गुज़र जाने की मनहूस ख़बर आ गयी। रात डेढ़ बजे ही मायके जाने को निकल पड़ी। अगल-बगल के रिश्तेदार आ गए थे, पापा ने ख़ुद ही उन्हें ख़बर दी थी। बेहद ही दर्द भरा क्षण था वह। माँ की बात भगवान ने नहीं मानी। जिस समय घाट ले जाने को अंतिम दर्शन के लिए पापा को माँ के सामने लाया गया, पापा की आँखों में एक बूँद भी पानी नहीं था, कठोर पत्थर-सी आँखें, भाव शून्य।

रा... कहते-कहते मुँह खुला रह गया, आगे बोलती बंद। लोग पापा को धीरज बँधाने लगे, उन्हें रुलाने का उपाय करने लगे, लेकिन सब व्यर्थ। सदमे का चरम उत्कर्ष था यह, लेकिन पापा ने माँ को हाथ उठा कर विदा किया। भाई के घाट जाते ही मैंने पापा को अस्पताल में भर्ती करवा दिया ताकि डॉक्टर की निगरानी में कोई डर न हो।

मुझे और भाभी को स्थिति नोर्मल होने तक वहीं रहना था। तेरहवीं के बाद मेरे पति भी अपने शहर चले गए और भैया भी दुबई लौट गए। भाभी पापा के जिगरी दोस्त की बेटी थीं। माँ की मृत्यु की ख़बर सुनकर उनके मम्मी-पापा भी आ गए थे और पूरे घर को अभिभावक की तरह सम्भाल लिया था। पापा की बहुत सेवा करते। अस्पताल से घर लाने पर भी उनके साथ बने रहते। भाभी को इतने वर्षों में पहली बार देखा, पापा का हाथ सहलातीं, बातें करतीं और बंटू को भी उनके

साथ रहने कहतीं। पापा बस इशारे से बात करते, जाने किस आत्मीय क्षणों में माँ ने उन्हें हिदायत दी थी कि उन्हें उदास नहीं रहना है, पापा ने सारे ग़म को पी लिया था। बाहर से पर्वत- सा दिखने वाले पापा के अंदर कितनी नदियाँ जज़्ब थी, केवल मैं जानती थी। जाने कब एक कमज़ोर सतह पाकर वे बाहर आ जाएँ, जिसका हम सब को इंतज़ार था।

डॉक्टर ने भी कहा था कि वो जी भर कर रो लेते तो कोई डर नहीं था। समय बीतता जा रहा था। घर में आए हुए मेहमान चले गए थे, हालाँकि चाचा-मौसी आदि अनेक रिश्तेदार इसी शहर में रहते थे। माँ की तरह हम सब उन्हें समय से नाश्ता-पानी, जूस आदि देते। माँ के समय ना-नुकूर करने वाले पापा बिन कुछ बोले चुपचाप खा लेते, मानो बस पेट भरना ध्येय हो, स्वाद से परे। इस बीच बंटू को बड़े घर, लॉन आदि की सुविधा बहुत भा रही थी। वह अक्सर अपनी मम्मी से कहता, "मैं यहीं रहूँगा, यहीं पढ़ूँगा, पापा के पास के छोटे-छोटे कमरों वाले मकान में नहीं रहना। "बच्ची भी चलना सीख रही थी। बच्चों को देखने के लिए भाभी के घर से अतिरिक्त नौकर आ गए थे।

हर तरह की सुख - सुविधा थी। पापा को अकेले छोड़ कर जाने की चिंता से मुक्त होने का यह अच्छा अवसर था। एक दिन मैंने भाभी से मौक़ा देखकर कहा "यहीं रह जाओ आप, बंटू का दाख़िला करवा देना यहीं के स्कूल में, भाई तो आ ही जाते हैं बीच-बीच में। कहने को तो भाई दुबई में था, लेकिन इतनी सुविधाएँ सीमित आमदनी में कहाँ संभव थीं? भाभी ने भी बच्ची के कुछ बड़े होने तक वहीं रहने का मन बना लिया। उनके मम्मी - पापा भी तो उसी शहर में थे, जहाँ वह आती-जाती रहतीं थीं।

हफ़्ते भर बाद मेरे लौटने का टिकट हो गया था। बारिश का महीना था। सवा साल की बिटिया बरामदे में खेल रही थी। बदल गरज रहे थे, बीच-बीच में बिजली भी कड़क रही थी। पापा ने इशारे से उसे अपने पास बुला लिया। वह भी कूदती-फाँदती आकर पापा की गोद में समा गयी। तभी उसे अपनी जूती दिखाई दी जो भीग रही थी। उसे अंदर लाने के लिए वह झट पापा की गोद से उतरी और नीचे जाने लगी। बारिश तो हो ही रही थी, अचानक इतनी ज़ोरदार बिजली कड़की कि बच्ची का संतुलन बिगड़ गया और बरामदे की सीढ़ी से नीचे गिर पड़ी। पापा भी बिजली की कड़क से असहज हो रहे थे। बच्ची को गिरते देख उनके मुँह से एक दर्दनाक चीख़ निकल पड़ी, "नी....। अरे देखो...।" भाभी बच्ची की ओर दौड़ी और जेतु जो पापा का अटेंडेंट था, पापा की ओर दौड़ पड़ा। मिट्टी गीली होने के कारण तीन-चार सीढ़ियों से फिसलने के बाद भी बच्ची को ज़्यादा चोट नहीं लगी थी। डर के कारण वह ज़्यादा रो रही थी। छह महीने पहले पापा के मुँह से निकला माँ का अधूरा नाम आज एक प्यार के रिश्ते ने जोड़ कर पूरा कर दिया था, मानो इतने महीने से वो अपनी रानी को पुकारने की असफल कोशिश कर रहे हों। पोती के प्यार ने उनकी वाणी लौटा दी थी। "चुप निन्नी, चुप हो जा गुड़िया, "बोलते हुए बिटिया को उन्होंने अपने सीने से लगा लिया। इतने दिनों बाद पापा को बोलते देख कर हम सब ख़ुशी से रो पड़े। रिश्तेदारों को यह ख़बर भी दे दी गयी। चाचा-चाची तो थोड़ी देर बाद पहुँच ही गए और रात को वहीं ठहर गए।

मेरे लौटने के चंद घंटे पहले पापा ने माँ की अलमारी खुलवाकर उनके कुछ गहने मुझे दिए और अपनी टूटी-फूटी वाणी में मुझे ख़ुश

रहने के आशीर्वाद भी। माँ के बिना पापा को छोड़ कर आने में मुझे कहीं से संतुष्टि नहीं मिल रही थी। मैं पापा के सीने से लग कर रो पड़ी और एक आश्चर्यमिश्रित सफलता फिर मिली, जब पापा भी मेरी जुदाई में वैसे ही बिलखने लगे जैसे शादी के बाद मेरी विदाई में रो-रो कर बार-बार बेहोश हो रहे थे। भाभी, बंटू, चाची, जेतु और चाचा ने उन्हें पहले रोने दिया क्योंकि यह मेरी जुदाई से ज़्यादा माँ के

बिछोह के आँसू थे जिन्हें निकलना ज़रूरी था। मैंने माँ का ही रूप लिया था, शायद इसलिए जब तक मैं उनके आस-पास थी, मुझमें वह माँ का बिम्ब देख कर ख़ुद को समझाते रहे होंगे, पर अब अपनी पीड़ा को रोक पाना संभव नहीं था। उनके संभलते ही मैंने उनके हाथों से अपना हाथ छुड़ाया और जल्द मिलने का वादा करके कार में बैठ गयी। मन में शांति थी। आज माँ की आत्मा को भी शांति मिली होगी। प्यार की डोर नाज़ुक ही सही, एक-दूजे को बाँधने की क्षमता रखती है।

डॉ. कविता विकास
धनबाद, झारखंड

कविता

...अतीत से वर्तमान, हिंदी साहित्य का संसार

अतीत से वर्तमान, हिंदी साहित्य का संसार
अतीत से वर्तमान, हिंदी साहित्य का
संसार,
आइए करते हैं, इसका गुणगान। ।

तुलसी, कबीर जायसी, रहीम.....
सभी ने रची हिंदी की तदबीर।
निराला, पंत, महादेवी, प्रेमचंद,
हरकोई रहा हिंदी का जयवीर।।

अतीत से वर्तमान तक की
गौरव गाथा से है हर कोई दंग।
क्योंकि छोड़ हिंदी का संग
आज बन गया है
हर शख्स पश्चिम का जयचंद।।

हम करते है, भारत वर्ष की बात,
तो पाते है,
क्षेत्री भाषा का कही है बहुवाद तो,
अंग्रेजी का है चलन, बहुतायात।

अब कौन समझाए भाषाविदो को अब कि,
रंग-रूप भाषा का बन गया है,
अति लघु रूप।
आइए करे कोई जतन ऐसा कि
निज भाषा, निज ज्ञान,
और निज संविधान से मिलाकर
बनाए भारतवर्ष महान।

जय हिंदी, जय विधान, भारत देश
रहे सदा महान, सदा महान।।

राम प्रजापति,
खेल समन्वयक,
रेलवे खेल संवर्धन बोर्ड

दिनांक 12 जून, 2023 को अपर सदस्य (भूमि एवं सुविधाएं), रेलवे बोर्ड, श्री शरद मेहता की अध्यक्षता में आयोजित रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्व्यन समिति की 147वीं बैठक की झलकियां

दिनांक 19.07.2023 को रेलवे बोर्ड (रेल भवन) में निदेशक, राजभाषा, डॉ. बरुण कुमार द्वारा बोर्ड कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए "हिंदी और वर्तनी (शुद्ध हिंदी कैसे लिखें?)" विषय पर आयोजित कार्यशाला की कुछ झलकियां

21 से 23 जून, 2023 तक इरिमी, जमालपुर में अखिल रेल हिंदी निबंध, हिंदी वाक् तथा हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन

रेल कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तथा कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की रूचि उत्पन्न करने के लिए रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) प्रतिवर्ष अखिल रेल स्तर पर हिंदी निबंध, हिंदी वाक् तथा हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। क्षेत्रीय रेल स्तर पर इन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) द्वारा अखिल रेल स्तर पर आयोजित की जाने वाली हिंदी निबंध, हिंदी वाक् तथा हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं में शामिल किया जाता है। इस वर्ष इन प्रतियोगिताओं का आयोजन दिनांक 21.06.2023 से 23.06.2023 तक भारतीय रेल यांत्रिक एवं विद्युत अभियंत्रण संस्थान (इरिमी), जमालपुर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

21 जून, 2023 को पूर्वाहन् 10.00 बजे उक्त प्रतियोगिताओं का विधिवत उद्घाटन इरिमी के ऑडिटोरियम में अपर महानिदेशक श्री प्रसादा रवि कुमार के द्वारा मां सरस्वती को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर संयुक्त निदेशक (राजभाषा), संकायाध्यक्ष एवं वरिष्ठ आचार्य (आरएसटी), वरिष्ठ आचार्य (डब्ल्यू.एम.टी.), आचार्य (डब्ल्यू.एम.टी.) तथा अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण के साथ-साथ विभिन्न रेल अंचलों से आए प्रतिभागी भी उपस्थित थे।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर द्वीप प्रज्ज्वलित करते अपर महानिदेशक तथा स्वागत संबोधन देते हुए संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् संयुक्त निदेशक, राजभाषा श्री रिसाल सिंह ने अपने स्वागत संबोधन में तीनों प्रतियोगिताओं से जुड़ी जानकारी एवं उनके दिशा-निर्देशों से सभी प्रतिभागियों को विस्तार से अवगत कराया और उनकी शंकाओं का समाधान भी किया। तत्पश्चात, प्रतियोगिताओं के शुभारंभ की घोषणा की गई।

दिनांक 21.06.2023 को पूर्वाहन 11:00 से 12:00 बजे तक हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें प्रतिभागियों को दो विषय यथा- **"ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर हिंदी का प्रयोग"** तथा **"मीडिया और सामाजिक उत्तरदायित्व"** में से किसी एक विषय पर निबंध लिखने के अनुदेश दिए गए। इस प्रतियोगिता में कुल 21 रेल कर्मियों ने भाग लिया।

दिनांक 21 जून, 2023 को ही अपराहन् 15:00 से 16:30 बजे तक हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके प्रश्न-पत्र प्रतिभागियों को परीक्षा स्थल पर ही उपलब्ध कराए गए। इस प्रतियोगिता में कुल 16 रेल कर्मियों ने भाग लिया।

निबंध प्रतियोगिता एवं हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागीगण

22 जून, 2023 को पूर्वाहन 11.00 बजे से वाक् प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। वाक् प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागियों को दो विषय यथा- **"सोशल साइटों में हिंदी का प्रयोग"** और **"सोशल मीडिया और हमारी निजता"** दिए गए जिसमें से प्रतिभागियों ने अपनी इच्छानुसार किसी एक विषय पर निर्णायक मंडल के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किए। इस प्रतियोगिता में कुल 17 रेल कर्मियों ने भाग लिया।

वाक् प्रतियोगिता में अपने विचारों को रखते प्रतिभागीगण

23 जून, 2023 को सुबह 10:00 बजे इरिमी, जमालपुर के ऑडिटोरियम में पुरस्कार

वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम, निदेशक (राजभाषा) डॉ. बरुण कुमार ने इरिमी, जमालपुर के अपर महानिदेशक, श्री प्रसादा रवि कुमार को स्मृति चिन्ह आदि प्रदान करते हुए उनका स्वागत किया। इस अवसर पर आचार्य (डब्ल्यू.एम.टी.) एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री शाश्वत गुप्ता तथा संस्थान के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर जमालपुर के कलाकारों द्वारा नृत्य एवं संगीत का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसकी हॉल में बैठे सभी श्रोतागण ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक (राजभाषा) डॉ बरुण कुमार द्वारा की गई तत्पश्चात् मुख्य अतिथि द्वारा उक्त तीनों प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए।

अपर महानिदेशक महोदय का स्वागत करते हुए निदेशक, राजभाषा

सभा को संबोधित करते हुए अपर महानिदेशक, इरिमी, जमालपुर

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं संस्थान के अपर महानिदेशक श्री प्रसादा रवि कुमार ने अपने संबोधन में इन प्रतियोगिताओं में दूर दराज के क्षेत्रों से पधारे सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि भारत की एकता, अखण्डता, स्वाधीनता, उन्नति एवं प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए हमें पूर्ण निष्ठा के साथ हिंदी को आत्मसात करना चाहिए। उन्होंने कार्यक्रम में शामिल सभी कार्मिकों एवं प्रतिभागियों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया और बोर्ड कार्यालय द्वारा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों और कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि इरिमी संस्थान भी राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए दृढ़ संकल्पित है।

संगीत एवं नृत्य कार्यक्रम

अपना संबोधन देते डॉ. बरुण कुमार, निदेशक (राजभाषा) तथा धन्यवाद ज्ञापन देते हुए श्री शीलभद्र दास, आचार्य, ट्रेन सेट

निदेशक (राजभाषा) ने अपने भाषण में कहा कि अखिल रेल स्तर की ऐसी प्रतियोगिताओं से हिंदी की व्यापकता का संदेश तो जाता ही है साथ ही राजभाषा के प्रति उत्साह एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण भी बनता है। उन्होंने आचार्य (डब्ल्यू.एम.टी.) एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री शाश्वत गुप्ता, मुख्य अनुदेशक (ईएन) श्री प्रत्यूष आनंद, कनिष्ठ अनुवादक श्री हिमालय कुमार हिमांशु एवं उनकी टीम के समस्त कार्मिकों को कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए बधाई दी। तत्पश्चात, श्री शीलभद्र दास, आचार्य, ट्रेन सेट के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

उपलब्धियां

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा आयोजित प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (08.05.2023 से 16.06.2023) में रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) से सुश्री नेहा साव एवं श्रीमती बैशाली भट्टाचार्जी ने भाग लिया जिसमें नेहा साव ने कास्य पदक प्राप्त किया।

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद एवं आचार्य शिवपूजन सहाय की जयंती एवं प्रदर्शनी का आयोजन

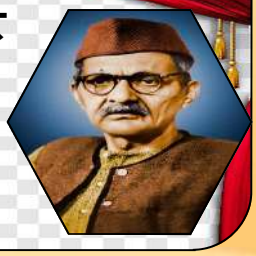

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के राजभाषा निदेशालय द्वारा रेल भवन के सम्मेलन कक्ष में दिनांक **01 जुलाई, 2023 को उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद एवं आचार्य शिवपूजन सहाय** की जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दोनों साहित्यकारों की रचनाओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में अपर सदस्य (मानव संसाधन) श्री राजीव किशोर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यपालक निदेशक, स्थापना (सामान्य) श्री सुधीर कुमार उपस्थित थे। अतिथि वक्ता के रूप में श्री अनंत विजय, लेखक, पत्रकार एवं संपादक, दैनिक जागरण पधारे थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दोनों साहित्यकारों के चित्र पर माल्यार्पण करके तथा उनके समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।

साहित्यकारों के चित्र पर माल्यार्पण करते मुख्य अतिथि **अपर सदस्य (मानव संसाधन), श्री राजीव किशोर,** दीप प्रज्ज्वलित करते हुए अतिथि वक्ता **श्री अनंत विजय, कार्यपालक निदेशक, स्थापना (सा.) श्री सुधीर कुमार** तथा निदेशक, राजभाषा **डॉ. बरुण कुमार**

बोर्ड कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में लगी प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए आमंत्रित वक्ता तथा बोर्ड कार्यालय के अधिकारी

अपर सदस्य (मानव संसाधन) श्री राजीव किशोर ने दोनों साहित्यकारों की जयंती मनाए जाने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की तथा अपने स्वागत संबोधन में कहा कि साहित्यकारों को याद करके हम अपनी भाषा और साहित्य की महान विरासत को भी याद करते हैं। राजभाषा के

अतिथि वक्ता श्री अनंत विजय तथा निदेशक, राजभाषा व्याख्यान देते हुए

प्रचार-प्रसार के लिए अधिकारियों/कर्मचारियों को अपनी भाषा और साहित्य से जोड़ना भी अत्यंत आवश्यक है।

निदेशक, राजभाषा डॉ बरुण कुमार ने **उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद** के व्यक्तित्व व कृतित्व की विस्तार से व्याख्या की और उनके जीवन से जुड़े बहुत से रोचक तथ्यों को उजागर किया। श्री अनंत विजय ने अपने व्याख्यान में हिंदी साहित्य में **आचार्य शिवपूजन सहाय** के योगदान का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने **शिवपूजन सहाय और** प्रेमचंद जी के परस्पर सहयोग एवं संवाद तथा साहित्य को उसकी देन के बारे भी प्रकाश डाला।

संयुक्त निदेशक (राजभाषा), श्री रिसाल सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यपालक निदेशक, स्थापना (सामान्य) श्री सुधीर कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

झाँसी की रानी का अभागा पुत्र दामोदर राव

झाँसी की रानी का वह चित्र प्रसिद्ध है जिसमें वे हाथों में तलवार लिए अंग्रेजों के साथ युद्ध कर रही हैं और उनकी पीठ पर उनका बेटा बंधा है। हममें से ज्यादातर लोग नहीं जानते होंगे कि रानी की मृत्यु के बाद उस बेटे का क्या हुआ, बल्कि उसका नाम भी क्या था। उसकी कोई कहानी नहीं मिलती। सरकारी अभिलेखों में भी उसका जिक्र नहीं मिलता क्योंकि अंग्रेजों ने उसे झाँसी का उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया था। इस महत्वपूर्ण चरित्र का एकमात्र वर्णन एक मराठी किताब 'इतिहासाच्य सहली' (इतिहास की सैर) में मिलता है, जिसके लेखक हैं वाई एन केलकर। यह किताब १९५९ में छपी थी।

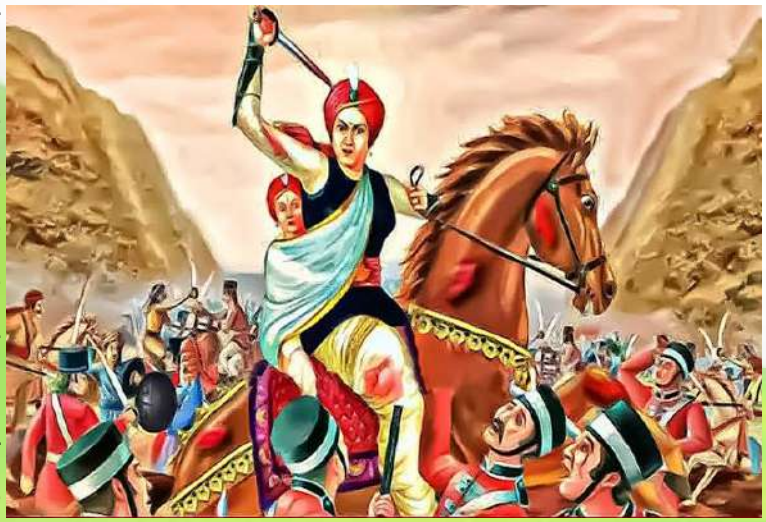

इस उपेक्षित अचर्चित चरित्र का नाम है दामोदर राव (असली नाम आनंद राव)। इसने बड़ा दुखद अभिशप्त जीवन पाया। उनका जन्म १५ नवंबर १८४९ को नेवलकर राजपरिवार की एक शाखा में हुआ था। ज्योतिषियों ने उनकी कुंडली में राजयोग देखा और उनके राजा बनने की भविष्यवाणी की। यह भविष्यवाणी उनके जीवन में बड़े दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से सत्य हुई। रानी लक्ष्मीबाई के अपने पुत्र की कुछ महीनों में ही मृत्यु हो जाने के बाद रानी लक्ष्मीबाई ने दामोदर राव को गोद ले लिया। उस वक्त दामोदर राव तीन साल के थे। शीघ्र ही झाँसी के महाराजा भी बीमारी से चल बसे। रानी लक्ष्मीबाई के सामने विकट भविष्य मुँह बाए खड़ा हो गया।

उस वक्त भारत में अंग्रेजी राज के सबसे बड़े नुमाइन्दे गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने भारतीय राज्यों के हड़पने के लिए 'व्यपगत का सिद्धांत (doctrine of lapse)' चला रखा था। इस सिद्धांत के अनुसार किसी राज्य का पैतृक वारिस के न होने की स्थिति में उसकी

सर्वोच्च सत्ता अपने आप (ईस्ट इंडिया) कंपनी के पास चली जाती थी। यानी कोई राजा अगर निःसंतान हो तो उसकी मृत्यु के बाद उसका राज्य ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा बन जाता था। कई राजाओं ने इस सिद्धांत के चंगुल से बचने के लिए दत्तक पुत्र ले लिए लेकिन डलहौजी ने दत्तक पुत्र को स्वाभाविक वारिस मानने से इनकार कर दिया था। इसी सिद्धांत के सहारे डलहौजी ने सतारा, जैतपुर-संभलपुर, बघाट, उदयपुर, नागपुर और करौली राज्यों का अंग्रेजी राज में विलय कर लिया था। झाँसी भी इस नीति का शिकार बना। डलहौजी ने राजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद दत्तक पुत्र दामोदर राव को वारिस नहीं माना। उसने आदेश जारी कर दिया कि झाँसी को ब्रिटिश राज में मिला लिया जाएगा। रानी के लिए उसने सालाना ५०००/- रु० की पेंशन बांध दी। महाराज की सारी सम्पत्ति लक्ष्मीबाई के पास ही रहनी थी। रानी के बाद उनके खजाने पर दामोदर राव का पूरा हक होगा, लेकिन उसे झाँसी का राज नहीं मिलेगा। इसके अलावा अंग्रेजों के खजाने में झाँसी के राजा द्वारा जमा किए गए सात लाख रुपया दामोदर राव के बालिग होने पर उसे दे दिया जाएगा।

महारानी ने उसके निर्णय के खिलाफ बगावत कर दिया। २३ मार्च १८५८ को झाँसी की प्रसिद्ध लड़ाई शुरू हुई जिसमें रानी ने अप्रत्याशित वीरता का परिचय दिया। १८ जून १८५८ को रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु के साथ लड़ाई समाप्त हुई। पूरी लड़ाई में उन्होंने दामोदर राव को अपनी पीठ पर बैठा रखा था। उस युद्ध में रानी अत्यंत जख्मी होकर अपने घोड़े पर से नीचे गिर गई थीं। एक सैनिक उन्हें पास के एक मंदिर में लेकर गया था। उस समय उनकी साँसें चल रही थीं। रानी ने मंदिर के पुजारी को कहा कि मैं अपने पुत्र दामोदर को आपके पास देखने के लिए छोड़ रही हूँ। उसके बाद उनकी सांसे बंद हो गईं। उस वक्त दामोदर राव की उम्र सवा नौ साल थी।

ग्वालियर की उस लड़ाई में रानी के कुल साठ विश्वासपात्र ही जिंदा बच पाए थे। दामोदर राव की जिम्मेदारी उन्हीं ने उठाई। उनमें नन्हें खान रिसालेदार, गनपत राव, रघुनाथ सिंह और रामचंद्र राव देशमुख विशेष उल्लेखनीय हैं। रानी की मृत्यु के बाद वे बाइस घोड़े और साठ ऊँटों के साथ बुंदेलखंड के चंदेरी की तरफ चल पड़े। उनके पास खाने, पकाने और रहने के लिए कुछ नहीं था। अंग्रेजों के डर से कोई गाँव उन्हें शरण नहीं देता था। मई-जून की गर्मी में वे पेड़ों तले खुले आसमान के नीचे रात बिताते रहे। शुक्र था कि जंगल के फलों के चलते कभी भूखे सोने की नौबत नहीं आई।

असल दिक्कत बारिश शुरू होने के साथ शुरू हुई। घने जंगल में तेज मानसून में रहना असंभव हो गया। किसी तरह एक गाँव के मुखिया ने उन्हें खाना देना भर स्वीकार किया। उसने एक महीने के राशन और ब्रिटिश सेना को खबर न करने की कीमत पाँच सौ रुपए, नौ घोड़े और चार ऊँट तय की। जगह अच्छी थी और झरने के पास थी। रघुनाथ राव की सलाह पर वे सभी दस-दस की टुकड़ियों में बँटकर रहने लगे।

वहाँ वे लोग दो साल रहे। मुखिया को शुल्क देते देते उनके पास ग्वालियर छोड़ते समय जो साठ हजार रुपये थे वे खत्म हो गए। छिपकर रहने के चक्कर में सबका स्वास्थ्य खराब होने लगा। दामोदर राव की तबियत इतनी खराब हो गई कि लगने लगा

कि नहीं बचेंगे। लोग मुखिया से गिड़गिड़ाए कि वह किसी वैद्य का इंतजाम करें। मुखिया ने अच्छी खासी कीमत २०० रुपये वसूलकर वैद्य का इंतजाम किया। दामोदर राव ठीक तो हो गए लेकिन पैसे खत्म हो जाने के बाद उन्हें वहाँ रहने नहीं दिया गया। मुखिया ने उनके मात्र तीन घोड़े वापस किए।

जब उस गाँव से चले तब वे लोग चौबीस आदमी थे। शेष या तो बीमारी की भेंट चढ़ गए या फिर कठिनाइयों से घबराकर चले गए।

लेकिन दुर्भाग्य ने अभी पीछा नहीं छोड़ा था। ग्वालियर के शिप्री गाँव के लोगों ने उन्हें बागियों के रूप में पहचान लिया। उन्होंने उन्हें बंदी बना लिया और अंग्रेजों को खबर कर दिया। सिपाही आकर उन्हें झालरपाटन के पॉलिटिकल एजेंट के पास ले गए। दामोदर राव की कम उम्र और रुग्ण अवस्था को देखते हुए उनके साथ के लोगों ने उन्हें रास्ते में बारी बारी से अपनी पीठ पर बिठाकर ले गए।

पॉलिटिकल एजेंट ने ज्यादातर लोगों को पागलखाने में डाल दिया। किसी तरह रानी साहेब के रिसालेदार नन्हें खान ने पॉलिटिकल एजेंट से बात की। उसने मिस्टर फ्लिंक से कहा कि झाँसी रानी साहिबा का बच्चा अभी नौ-दस साल का है। रानी साहिबा के बाद उसे जंगलों में जानवरों जैसी जिंदगी काटनी पड़ रही है। बच्चे से तो सरकार को कोई नुक्सान नहीं। इसे छोड़ दीजिए, पूरा मुल्क आपको दुआएँ देगा।

युवराज, उनकी परिषद ओर सिपाह सालार

फ्लिंक को दया आ गई। उसने सरकार से इनकी पैरवी की। सरकार ने उसकी बात सुनना स्वीकार किया। इंदौर के कर्नल सर रिचर्ड शेक्सपियर ने मिलने के लिए बुलाया। अब दामोदर राव अपने विश्वस्तों के साथ इंदौर के लिए निकल पड़े। पास में पैसा नहीं था। सफर का खर्च और खाने के जुगाड़ के लिए उन्हें रानी माँ के बत्तीस तोले के दो तोड़े बेचने पड़े। दामोदर राव के पास 'माँ साहेब' से जुड़ी वही एक आखिरी चीज थी।

इंदौर जाना सफल रहा। कर्नल शेक्सपियर ने उनकी बात सुनी। उसने दामोदर राव को सालाना १०००० रुपये की पेंशन बांध दी। लेकिन उसने कंपनी के पास महाराज के जमा सात लाख रुपए लौटाने से इनकार कर दिया। दामोदर राव को अपने साथ सिर्फ सात लोगों को अपने साथ रखने की इजाजत मिली। वह ५ मई १८६० का दिन था।

इंदौर में दामोदर राव की असली माँ थीं। उन्हीं ने उनका पालन पोषण किया। दामोदर राव के बड़े होने पर उन्होंने उनका विवाह करवा दिया। लेकिन कुछ ही समय बाद पत्नी का देहांत हो गया। दामोदर राव की दूसरी शादी हुई, जिससे उन्हें एक पुत्र प्राप्त हुआ। इसका नाम था लक्षमण राव। दामोदर राव के दुर्दिन समाप्त नहीं हुए। अंग्रेज उनपर कड़ी निगरानी रखते थे। दामोदर राव और उनके बेटे लक्ष्मणराव को भी इंदौर से बाहर जाने की इजाजत नहीं थी। २८ मई १९०६ को इंदौर में

उनके उपेक्षित और कठिनाई भरे जीवन का अंत हो गया।

दामोदर राव में चित्रकार की प्रतिभा थी। उन्होंने अपनी माँ के याद में उनके कई चित्र बनाए जो झाँसी परिवार के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

दामोदर राव के परिवार वाले आज भी इंदौर में 'झाँसीवाले' उपनाम के साथ रहते हैं। रानी का एक सौतेला भाई चिंतामनराव तांबे भी था। तांबे परिवार इस समय पूना में रहता है। झाँसी के रानी के वंशज इंदौर के अलावा देश के कुछ अन्य भागों में रहते हैं। वे अपने नाम के साथ झाँसीवाले लिखा करते हैं।

दामोदर राव के पुत्र लक्ष्मण राव के दो बेटे हुए - कृष्ण राव और चंद्रकांत राव। कृष्ण राव के दो पुत्र हैं - मनोहर राव और अरूण राव। चंद्रकांत राव के तीन पुत्र हैं - अक्षय चंद्रकांत राव, अतुल चंद्रकांत राव और शांति प्रमोद चंद्रकांत राव। लक्ष्मण राव तथा कृष्ण राव इंदौर न्यायालय में टंकक का कार्य करते थे। अरूण राव मध्यप्रदेश विद्युत मंडल से बतौर जूनियर इंजीनियर २००२ में सेवानिवृत्त हुए हैं। उनका बेटा योगेश राव सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। वंशजों में प्रपौत्र अरुणराव झाँसीवाला, उनकी धर्मपत्नी वैशाली, बेटे योगेश व बहू प्रीति का धन्वंतरिनगर इंदौर में सामान्य मध्यमवर्ग परिवार है।

दामोदर राव का जीवन दुर्भाग्य और संघर्ष की त्रासदी है। जिस माँ ने उन्हें गोद लिया वे जीवित नहीं रहीं। वे दत्तक पुत्र बने लेकिन उत्तराधिकार से वंचित हो गए। अंग्रेजों के साथ लड़ाई माँ ने लड़ी लेकिन भाग्य ने उसका बदला दामोदर राव से लिया। कुंडली का राजयोग उन्हें राजगद्दी तक लाकर भी राजा नहीं बना सका। अंग्रेजों से पेंशन मिलने के बाद भगोड़ेपन से मुक्ति तो मिली लेकिन पुनः पाबंदियों से भरा अपमानपूर्ण जीवन रहा। १८५७ के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है और रानी लक्ष्मीबाई को उसकी एक मुख्य योद्धा। दामोदर राव उस विद्रोह की सबसे महत्वपूर्ण कहानी को जीनेवाला, उसके परिणामों को भुगतनेवाला किरदार है। एक बड़ा लक्ष्य एक बड़ी लड़ाई अपने प्रमुख चरित्रों के साथ कई अन्य जिंदगियों की भी आहुति लेती है। आइये आजादी के सतहत्तरवें वर्ष में हम आजादी की पहली लड़ाई की आहुति चढ़े इस अनसुने, उपेक्षित चरित्र को याद करें।

अरुण राव झाँसीवाला (नीले कुर्ते में) अपने बेटे योगेश राव झाँसीवाला (लाल कुर्ते में) अपनी बहू प्रीत और उसके दो बच्चों प्रीयेश और धनिका राव झाँसीवाला के साथ|

विनीत कुमार
नई दिल्ली

आभासी दुनिया

लगभग दो वर्ष तो हो ही गये होंगे, दीक्षित जी को इस कॉलोनी में घर लिए हुए। गृह प्रवेश के समय उन्होंने कॉलोनी के सभी लोगों को बुलाया था। वहीं उनसे परिचय हुआ। केन्द्र सरकार की सेवा में उच्च पद से सेवानिवृत्ति उपरांत मिले फंड आदि से उन्होंने यह मकान लिया था। इकलौते बेटा-बहू इसी शहर में किसी कंपनी में कार्यरत थे। चार लोगों वाले उस घर में प्रायः सन्नाटा ही पसरा रहता।

चूँकि हमारा घर उनके घर के बिलकुल सामने ही है तो आते-जाते वहां नजर पड़ ही जाती थी। दीक्षित जी कभी कभार ही घर से बाहर निकलते थे। प्रायः अपने घर के लॉन में ही कुर्सी डाल कर पत्नी के साथ बैठकर आने-जाने वालों को निहारते रहते थे। अफसरियत या स्वभावगत, जो भी कारण हो, उन्होंने कभी भी आगे रहकर बातचीत करने की पहल नहीं की। हमारे अभिवादन करने पर ही वे बोला करते थे। बेटा-बहू भी किसी से बात नहीं करते थे। छुट्टी वाले दिन वे चारों अपनी कार से घूमने निकल जाते। ज्ञात यह भी हुआ कि रूखा व्यक्तित्व होने के कारण अपने कार्यकाल के समय दीक्षित जी बहुत अलोकप्रिय अधिकारी रहे थे।

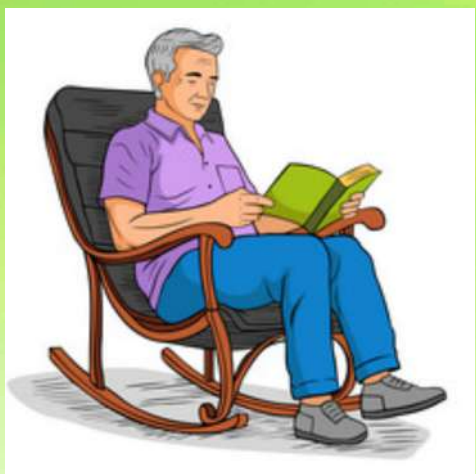

एक शाम हम ऑफिस से लौटे ही थे कि दरवाजे पर दस्तक हुई। बेटे ने दरवाजा खोला तो दरवाजे पर बदहवास हालत में दीक्षित जी की पत्नी को खड़े पाया।

-इन्हें पता नहीं क्या हुआ, बैठे-बैठे बेहोश हो गये- वे उसी बदहवास हालत में जल्दी-जल्दी बोल रहीं थीं।

-आप परेशान न हों, हम चलकर देखते हैं- कहते हुए हमने अपने कपड़े भी नहीं बदले और उनके साथ चले आयें। पीछे-पीछे हमारी श्रीमती भी आ गयीं।

लॉन की कुर्सी पर अचेतावस्था में पड़े दीक्षित जी को उनकी पत्नी के सहयोग से हमने अंदर कमरे में दीवान पर लिटा दिया। चेहरे पर पानी के छींटे डालने पर वे थोड़ा चैतन्य हुए।

श्रीमती दीक्षित मोबाइल पर किसी से संपर्क करने की लगातार कोशिश कर रही थीं। तभी उनके मोबाइल पर ही कॉल आ गई।

-कब से कॉल कर रही हूं, कहां हो तुम लोग?

-कहते कहते वे रूआंसी हो गईं।

-जल्दी आओ- थोड़ी आश्वस्त होकर उन्होंने कॉल काट दी।

-बेटा-बहू आने ही वाले हैं- उनके चेहरे पर अब थोड़ा सुकून था।

कुछ ही समय में उनके बेटा-बहू आ गये। हमें देख वे चौंके तो श्रीमती दीक्षित ने हमारे आने का कारण उन्हें बता दिया।

-ये डायबिटिक हैं। आज मंगलवार है तो व्रत में होने से शुगर लेबल कम हो गया होगा

-कहते हुए बेटा ग्लूकोमीटर उठा लाया और उनकी शुगर जांचने लगा।

-कहा था न, शुगर कम हो गयी होगी- ग्लूकोमीटर दिखाते हुए वह बोला।

-कुछ खिला दो, मम्मी इन्हें-बेटे के लहजे में थोड़ी खीज थी।

-धन्यवाद अंकल-बेटे के चेहरे पर किंचित कृतज्ञता के भाव उभर आये।

-कोई बात नहीं, बेटा। इंसान ही इंसान के काम आता है- हमने ऐसे अवसर पर बोला जाने वाला ब्रहमवाक्य बोला और अपने घर लौटने लगे।

-अंकल, आप अपना नंबर दे दीजिये- कुछ सकुचाते हुए वह बोला।

-अच्छा आप अपना नंबर बोल दीजिये। मैं कॉल करता हूँ तो मेरा नंबर भी आपके पास आ जायेगा।

आदित्य के नाम से सेव कर लीजिए- कहते हुए उसने अपनी जेब से मोबाइल निकाल लिया।

इस घटना को चार-पांच महीने हो गये। उस दिन के बाद इतना परिवर्तन हुआ था कि आमना-सामना होने पर आदित्य के चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाती और वह सिर हिलाकर अभिवादन भी करने लगा।

श्रीमती दीक्षित भी हमारी श्रीमती से अपने दरवाजे पर खड़े-खड़े थोड़ी बात कर लेतीं। दीक्षित जी भी अभिवादन का जवाब देने लगे थे। लेकिन कॉलोनी के बाकी लोगों के साथ उनका बर्ताव वैसा ही रहा।

फेसबुक पर आई आदित्य की फ्रैंड रिक्वेस्ट को हमने एक्सेप्ट करके उसकी प्रोफाइल देखी। उच्चशिक्षित आदित्य एक बड़ी अंतर्राष्ट्रीय कंपनी में उच्च पद पर कार्यरत था। उसके फ्रैंडों और फोलोवरों की संख्या हजारों में थी। उसकी पोस्टों पर सैंकड़ों लाइक और कमेंट्स आते थे।

एक रात ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे के करीब आदित्य की कॉल आई।

-सॉरी अंकल, इतनी रात को कॉल किया। दरअसल पापा एक्सपायर हो गये- कॉल रिसीव करते ही उधर से

आदित्य की कुछ परेशान सी आवाज आई।

-हम अभी आ रहे हैं- बिस्तर से उठते हुए हमने कहा।

-अभी रहने दीजिए, अंकल। आप सुबह आ जाइये- आदित्य ने मना कर दिया।

-सुबह आकर क्रियाकर्म का सामान लाना होगा। यहां कॉलोनी के लोगों से भी कह देंगे- हमने थोड़ा जिम्मेवारी दर्शाते हुए कहा।

-कह दीजिए- उसने लगभग उदासीन ढंग से कहा।

-वैसे मैंने सोशल मीडिया पर मैसेज डाल दिया हैं। परिचित लोगों तक खबर पहुंच ही जायेगी-

आत्मविश्वास से भरे लहजे से यह कहकर आदित्य ने कॉल डिसकनेक्ट कर दी।

अलसुबह उठकर हम पति-पत्नी चाय लेकर दीक्षित जी के घर पहुँच गये। उनके यहां पहुंचने

वाले हम पहले व्यक्ति थे। हमने कॉलोनी के अन्य लोगों को भी यह खबर दे दी थी।

कुछ देर मे उनके दो-तीन रिश्तेदार भी आ गये। उन्होंने क्रियाकर्म की तैयारियां आरंभ कर दीं।

-अंतिम यात्रा का क्या समय दिया है?

-हमने दस बजा रही घड़ी को देखते हुए पूछा।

-नौ बजे का- आदित्य के स्वर में थोड़ी चिंता थी।

हमने मोबाइल में फेसबुक पर आदित्य का स्टेट्स देखा। उसने पिताजी के फोटो के साथ उनके निधन की पोस्ट डाली थी। इस पोस्ट पर तीन हजार आठ सौ से ज्यादा सेड वाली ईमोजी और नौ सौ से ज्यादा आर.आई.पी या सादर नमन, विनम्र श्रद्धांजलि के मैसेज आये थे। ये मिनट दर मिनट बढ़ रहे थे।

अंतिम यात्रा की तैयारी पूर्ण हो गई थी। ग्यारह बजे तक हम छह-सात लोगों के अलावा कोई नहीं आया था।

कॉलोनी के लोग अपने गेट तक आते और अंतिम यात्रा की कोई प्रक्रिया न देख वापस घरों में बैठ जाते।

-कॉलोनी के लोगों को बुला लें- आदित्य के चेहरे पर फैल रही निराशा को देख हमने आदित्य से पूछा।

-जी- रूआंसे हो चुके आदित्य के मुंह से बस इतना ही निकल सका। सम्भवतः उसे आभासी दुनिया का आभास हो गया था।

कमलेश कुमार झा
अधीक्षक टंकक
वरिष्ठ मंडल सिग्नल
एवं दूर संचार इंजिनीयर कार्यालय, झांसी

कविता

शहरों में कैद बचपन

वो गांव का बचपन
जहाँ खिलती थी मुस्कान।
चारों तरफ था खुला-खुला आसमान
शहरों में हैं बस बड़े-बड़े मकान।।

लड़ाई-झगड़े, गिरता उठता बचपन
निश्छल प्रेम महकता प्यार।
खेलों में बीत जाते दिन
अतरंगी खेल और शरारती यार।।

सूरज की किरणों से महकती सुबह
प्यारा बचपन जहाँ चार से चौदह हो जाते।
शाम ढले सब अपने-अपने घर को आते
आज के शहर में चार में से भी अकेले रह जाते।।

प्रकृति की वो सुन्दरता न्यारी
वो गांव की खुली हवा और हरियाली
अब न आसमान देखने को मिलता है
शहरों में रहता है मन खाली-खाली

न बिगड़ने दो हमारा ये बचपन
न कैद करो हमको शहरों की चार दिवारी में
मुझे भी जीना है अपने यारों के संग की यारी में
न आएगा लौटकर हमारा ये बचपन।।

गौरव जारेड़ा
पुत्र-श्री छगन लाल मीना
कक्षा 9, डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल
जसोला विहार दिल्ली

ऐतिहासिक लेख

दक्षिण के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

जब स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने वालों की बात की जाती है, तो जितने भी नाम सम्मुख आते हैं, उनमें से अधिकांश में उत्तर भारत, बिहार, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल तक सीमित रह जाते हैं ,लेकिन भारत मां की आज़ादी की ख़ातिर शीश चढ़ाने वालों में किसी भी हिस्से से सर की बाजी लगाने वाले लोगों की कमी नहीं रही। अगर 18 57 के स्वतंत्रता संग्राम की बात करें, तो उसके बाद सन उन्नीस सौ पांच में बंगाल विद्रोह के विरुद्ध आंदोलन की आग भड़काने वाले और स्वदेशी आंदोलन के जनक चिदंबरम पिल्लई को भुलाया नहीं जा सकता, जिन्हें अंग्रेजों ने बाद में कठोर कारावास दिया। सन्1917 में आदिवासी समाज को संगठित कर अल्लूरी सीताराम राजू ने जिस प्रकार गोरिल्ला युद्ध कर अंग्रेजों की नाक में दम कर दी, उसे आज भी, विशाखापट्टनम का पांडू रंगा गांव जहां उनका जन्म हुआ था, अपनी यादों में बसाए हुए हैं। इसी प्रकार सन 2017-18 के मध्य मात्र 12-13 साल की उम्र में ही तिरूपुर कुमारन ने जिस प्रकार स्वतंत्रता आंदोलन में कूद कर उस आंदोलन को धार दी और 1932 में विरोध मार्च में लाठी का वार खाकर 27 वर्ष की छोटी सी उम्र में अपनी जान गंवा दी, इस योगदान को क्या भुलाया जा सकता है। फिर सुभ्रमण्यम भारती ने राष्ट्रवाद को लेकर जिस प्रकार असंख्य रचनाऐं की और जिन्होंने पूरे देश को झंकृत किया, वह स्वतंत्रता संग्राम के नायकों से क्या कम हैं।

यह तो सब जानते हैं कि, पहला स्वतंत्रता संग्राम जिसे गदर कहा जाता है, सन् 18 57 में हुआ। झांसी की रानी, तात्या टोपे बहादुर शाह जफर, रानी ज़ीनत महल वगैरा-वगैरा के बलिदानों ने इस आंदोलन को हमारे इतिहास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण हिस्सा बना दिया। लेकिन आज मैं अपनी निगाहें जब उठाता हूं, तो मुझे अपने देश के दक्षिणी हिस्से के कुछ ऐसे दृश्य नजर आने लगते हैं, जिनकी ओर हमारे इतिहासकारों की नजर नहीं गई। आईये ऐसे ही स्वतंत्रता संग्राम के कुछ नायकों से रूबरू होते हैं।

सन् अट्ठारह सौ सत्तावन से भी बहुत-बहुत बहुत पहले की बात है

पहला दृश्य

(ढ़ोल और नगाड़ा बजने के स्वर। भीड़ के स्वर, लेकिन उन स्वरों से यह स्पष्ट हो रहा है, कि यह एक अनुशासित भीड़ है)

एक स्वर-(पूरे जोश के साथ बुलंद आवाज में)- साम्राट बीरन मुत्तू कोड़े की

समवेत स्वर- जय

(यह जय घोष तीन बार पूरे जोश के साथ दोहराया जाता है)

साम्राट कोड़े-मेरे प्रिय प्रजा जनो। आपका मुझे सम्राट संबोधित करना, अब मुझे इस सृष्टि का सबसे बड़ा झूठ महसूस होता है। आप सब मेरे दिल के हिस्से हो। हमारा यह तमिलनाडु जिसे प्रकृति ने वरदानों से सजाया है, अपने खजाने से हमें इतने मोती दिए हैं, कि हम उन मोतियों से कई पीढियां तक सुख से रह सकते हैं, लेकिन यह अंग्रेज़ जो समुद्री मार्ग से पुर्तगालियों और डचों के बाद आए, इन्होंने हमारे इन मोतियों की धरती पर कब्जा जमा लिया है। हम यह सहन नहीं करेंगे और इन्हें यहां से उखाड़ के फेंक देंगे।

एक स्वर- लेकिन अन्नदाता इन अंग्रेजों की ताकत के सामने हमारे सैनिक असहाय हो जाते हैं हम इनसे कैसे लड़ पाएंगे।

कोड़े- मंत्री जी कोई भी युद्ध न तो तलवारों के बल पर होता है न हीं तोपों के बल पर, युद्ध तो दिल की ताकत से लड़ा जाता है। और फिर यह तो हमारी अस्मिता का प्रश्न है। आज हमारा एक हिस्सा गुलाम हुआ है, लेकिन अगर अभी हमने इन अंग्रेजों से लोहा नहीं लिया तो आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी।

सेनापति महोदय आपकी क्या राय है।

सेनापति- वीर श्रेष्ठ मेरी तलवार मेरी म्यान से निकलने को व्याकुल है। आपके एक इशारे पर मेरे सैनिक रणभूमि में अपना जौहर दिखा देंगे।

कोड़े- तो ठीक है आज से ठीक 2 हफ्ते बाद हम इस विद्रोह को अंजाम देंगे और याद रहे कोई भी युद्ध जीतने के लिए ही लड़ा जाता है।

सूत्रधार- यह सभा यहीं पर समाप्त हो गई और कोड़े ने युद्ध की तैयारियां शुरू कर दी। यह संग्राम उन अंग्रेजों के विरुद्ध था जिनके पास उस समय के सबसे विकसित हथियार थे और सबसे बड़ा हथियार था कूटनीति। यह विद्रोह बहुत जल्दी ही दबा दिया गया और सन 1739 में कई अन्य लोगों के साथ महाराज बीरन अझगू मुत्तू कोणे को तोप से बांध दिया गया और गोले से उड़ा दिया गया।

18 वीं शताब्दी में तमिलनाडु के वीर पांडया कट्टबोम्मन ने अंग्रेजो के खिलाफ दूसरी शक्ति शाली जंग छेड़ दी ।

दूसरा दृश्य

(कट्टबोम्मन अपने एक सलाहकार से वार्ता में व्यस्त हैं)

कट्टबोम्मन- मैं इस विजयनगर साम्राज्य के उदय के बाद से दक्षिणी हिस्से में सेना प्रमुख और प्रशासनिक गवर्नर के रूप में नियुक्त किया गया था। ईस्ट इंडिया कंपनी के मालिकों से सारी शर्तें भी ठीक से तय हो चुकी थीं, लेकिन साथी- (जो शायद कोई प्रमुख सलाहकार है) लेकिन अब क्या हो गया। मान्यवर, क्या परिवर्तन हुआ है। आप क्यों इतने उद्विग्न हैं।

कट्टबोम्मन- बात सुनने में साधारण लग सकती है, लेकिन राजस्व बंटवारे को लेकर हमारे और ईस्ट इंडिया कंपनी में जो समझौता हुआ था, ईस्ट इंडिया कंपनी उसके बहाने हमारी संप्रभुता में दखलअंदाजी कर रही।

सलाहकार- आपकी बातों का मतलब है, कि

कट्टबोम्मन- मतलब यह है कि वे तमाम सारे उल्टे सीधे आरोप लगाकर हमें

निरंतर अपमानित कर रहे हैं और स्पष्ट संकेत दे रहे हैं, कि वे सारा प्रशासन स्वयं संभालेंगे।

सलाहकार -तो आपने क्या सोचा है ।

कट्टबोम्मन- सोचना क्या है। अगर अभी उनके विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष नहीं किया गया, तो हमारा यह तमिलनाडु उनकी ही जागीर बन जाएगा।

सूत्रधार- कट्टबोमन का चिंतन यद्यपि सही दिशा में था और उन्होंने अंग्रेजो के खिलाफ सशक्त संघर्ष करने में पूरी जान लड़ा दी, जनता ने उनका साथ दिया, लेकिन अपने जैसे अन्य सामंती प्रभुओं के विश्वासघात का वह शिकार बने। लगातार पहाड़ियों पर छिपकर गोरिल्ला युद्ध लड़ते हुए आखिर में वे अंग्रेजों के हत्थे चढ़ गए और 16 अक्टूबर 1799 को उन्हें फांसी दे दी गई। आज भी तमिलनाडु की लोक कथाओं में वे वहां के राबिन हुड माने जाते हैं। संघर्ष और बलिदानों की यह श्रंखला यहीं पर समाप्त नहीं हुई।

18 वीं शताब्दी के अंत की बात है तमिलनाडु के शिवगंगा क्षेत्र पर मुथू बडुगनाथ का राज्य था। पेरिया मारुथू और चिन्ना मारुथू उनके सेनापति थे।

महाराज बडुकनाथ ने अंग्रेजो के खिलाफ संघर्ष का बिगुल बजा दिया। युद्ध चल रहा था तभी एक सैनिक भागता हुआ पेरिया के पास आया

सैनिक- सेनापति जी हम इस युद्ध में लगभग हार चुके हैं। ज्यादा से ज्यादा आधे घंटे तक हम अंग्रेजों का मुकाबला कर पाएंगे।
(तभी दूसरा सैनिक भागता हुआ आया)

दूसरा सैनिक- सेनापति जी महाराज शहीद हो गए और अंग्रेज सैनिक और कमांडर महल की ओर जा रहे हैं

पेरिया- (सैनिकों से) देखो महाराज के शहीद होने के बाद अगर रानी भी अंग्रेजो के कब्जे में आ गईं, तो इस राज्य को बचाना असंभव हो जाएगा। तुम लोग फौरन जाओ और रानी को लेकर के जंगल की तरफ चले जाओ। पीछे पीछे हम दोनों भाई भी आ रहे हैं। सैनिक -जो आज्ञा
(तभी चिन्ना का प्रवेश)

चिन्ना- कुछ सुना तुमने हमारे महाराज बडुकनाथ नहीं रहे।

पेरिया- हां अभी अभी सैनिकों ने मुझे बताया है और मैंने तुरंत यह निर्णय लिया है, कि रानी साहिबा और हम दोनों जंगल में चले जाएंगे।

चिन्ना- क्या ऐसा ठीक रहेगा

पेरिया- बिल्कुल हमारे कुछ स्थानीय सरदार और राजा जो हमारे महाराज के प्रति वफादार हैं, हम उनको लेकर फिर एक बार सेना का गठन करेंगे और अंग्रेजों के शासन को उखाड़ देखेंगे

चिन्ना- ठीक है हम यही करते हैं।

सूत्रधार- पेरिया और चिन्ना रानी को लेकर के जंगल में चले गए और वहां एक सुरक्षित स्थान देखकर उन्होंने फिर से अपने राजाओं को और सरदारों को एकत्रित किया और *जम्बूद्वीप घोषणा* के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह कर दिया, किंतु इनको भी मुंह की खानी पड़ी। 24 अक्टूबर सन 1801 को दोनों भाईयों को पकड़ लिया गया और फांसी दे दी गई, लेकिन यह चिंगारी जो इन दोनों ने लगाई थी ,वह आग बनी और 10 जुलाई 1806 को *वेल्लोर विद्रोह* हुआ जो ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ भारतीय सिपाहियों का एक बड़ा विद्रोह था। इसमें 200 ब्रिटिश सैनिकों को मार दिया गया या लहुलोहान कर दिया गया और

अंग्रेजों को कर्कोट से सैनिकों को बुलाकर ही इस विद्रोह को कुचलने में सफलता प्राप्त हुई।

इसी प्रकार अक्टूबर 1721 में अंचु थेंगू किले की घेरावंदी कर स्थानीय लोगों ने ईस्ट इंडिया कंपनी के करीब 140 सैनिकों को मार गिराया था।

1942 में जब पूरे देश में अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन चल रहा था तब शिव मोंगा जिले के गांव ईस्सुरू में एक सभा जुटी। ग्राम प्रधान ने अपना संबोधन देते हुए कहा

ग्राम प्रधान- मेरे साथियों उधर महात्मा गांधी अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा देकर अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर रहे हैं, तो हमारा भी यह कर्तव्य है, कि हम उनके स्वर से स्वर मिलाकर कुछ ऐसा करें, की अंग्रेजों को महसूस हो, कि दक्षिण वाले भी गांधी जी की आवाज के साथ आवाज मिला रहे हैं।

एक ग्रामीण -लेकिन हम लोग हैं ही कितने, तो भला हमारी आवाज कहां तक पहुंचेगी?

प्रधान- गीता में कहा गया है कर्म करो फल की चिंता मत करो। हमें भी कर्म करना है। आवाज कहां तक पहुंचेगी, इसकी चिंता नहीं करनी है।

दूसरा ग्रामीण- आपने क्या विचार किया है?

प्रधान- हमारे देवता हैं वीरभद्र स्वामी और उनका देवस्थल हमारे लिए सर्वाधिक पूज्य है। हम उनके नाम पर समानांतर सरकार चलाएंगे।

एक ग्रामीण- इसका मतलब कि हम अपने नियम और कानून बनाएंगे।

प्रधान- बिल्कुल और अंग्रेजों को मूर्ख बनाने के लिए हम 16 साल से कम उम्र के बच्चों का चयन कैबिनेट के लिए करेंगे।

दूसरा ग्रामीण- बड़ा अच्छा फैसला आपने लिया है। हम सब आपके साथ हैं।

प्रधान- तो बस, अब यह सभा मैं यहीं समाप्त करता हूं। आप में से पांच लोगों को जिम्मेदारी दे रहा हूं, की अब हम अंग्रेजों को कोई टैक्स नहीं देंगे और हमेशा हर मोड़ पर उनकी खिलाफत करेंगे। यदि वे शस्त्र उठाते हैं, तो हम भी ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। बोलिए वीरभद्र स्वामी की

सम्वेत स्वर- जय

सूत्रधार- यह सचमुच बड़ा ही साहस पूर्ण फैसला था। 5 महीनों तक यह समानांतर सरकार चली। लेकिन यह ग्रामीण थे ही कितने और अंग्रेजों के पास तो धन बल, शस्त्र बल और कूटनीति बल था ही। अंग्रेजों ने बलपूर्वक इस विद्रोह को खत्म कर दिया ।गांव के बुजुर्ग तो जंगलों में भाग गए, ताकि वे फिर से सबको जोड़ कर कोई नया आंदोलन शुरू कर सकें, लेकिन पीछे छूट गए बच्चों और महिलाओं को काफी यातना झेलनी पड़ी। 41 लोगों को विद्रोह का दोषी माना गया इनमें से 5 को फांसी दी गई बाकी को उम्र कैद।

लेकिन इस अदम्य साहस की सराहना और शहीदों को श्रद्धांजलि आजाद हिंद रेडियो के माध्यम से सुभाष चंद्र बोस ने भी अर्पित की।

ऐसे असंख्य नाम हैं, जिन्होंने क्रांति की इस आग में अपने जीवन को होम कर दिया। बेशक बड़े इतिहास लेखकों की कलम उनका जिक्र करने से भी चूक गई हो, लेकिन अपने अपने क्षेत्र में वे आज भी श्रद्धा के साथ स्मरण किए जाते हैं।

सुशील सक्सेना
आगरा, उत्तर प्रदेश

डॉक्टर बिंदेश्वर पाठक - टॉयलेट क्रांति के जनक

डॉक्टर बिंदेश्वर पाठक ऐसी शख्सियत थे जिनकी सोच ने भारत को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को स्वच्छता की एक मिसाल दी। स्वच्छ भारत अभियान के करीब तीन दशक पहले उन्होंने खुले में शौच, दूसरों से शौचालय साफ करवाने और प्रदूषण जैसी तमाम सामाजिक बुराइयों या और कमियों पर रोक लगाने का जनांदोलन खड़ा कर पूरी दुनिया को अचंभित कर दिया। उनकी संस्था सुलभ इंटरनैशनल ने साफ-सफाई का एक मॉडल बनाया जिसने न सिर्फ स्वच्छता के क्षेत्र में, बल्कि रोजगार और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में भी कामयाबी के झंडे गाड़े।

बिहार के वैशाली जिले के रामनगर ग्राम में 2 अप्रैल 1943 को एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे बिंदेश्वर पाठक बचपन से ही कुछ अलग करने की सोच रखते थे। जब उन्होंने वर्ष 1964 में पटना यूनिवर्सिटी से समाज शास्त्र में स्नातक कर लिया तो कुछ ही वर्षों बाद उन्हें 1968-69 में बिहार सरकार के गांधी जन्म शताब्दी समारोह समिति के भंगी मुक्ति विभाग में नौकरी करने का मौका मिला। उनकी कार्यकुशलता और वैज्ञानिक सोच को परखते हुए समिति के अधिकारियों ने उन्हें दलितों को समाज की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए सुरक्षित और सस्ती शौचालय तकनीक विकसित करने का कार्य सौंपा। उन्होंने तभी इसपर कार्य शुरू कर दिया, लेकिन बाद में उन्होंने देखा कि सरकारी व्यवस्था में कोई भी निर्णय लेने और उसपर अमल करने में बहुत समय लगता है तो उन्होंने खुद ही कुछ करने की ठानी।

डॉक्टर बिंदेश्वर पाठक ने वर्ष 1974 में 'पे एंड यूज' टॉयलेट की शुरुआत की। जल्दी ही उनका ये कॉन्सेप्ट पूरे देश और कई पड़ोसी देशों में लोकप्रिय हो गया। उन्होंने अपनी संस्था का नाम रखा 'सुलभ इंटरनैशनल'। सस्ती शौचालय तकनीक विकसित करके उन्होंने सफाई के क्षेत्र में जुटे दलितों के सम्मान के लिए कार्य किया। इससे उनके व्यक्तित्व में बड़ा बदलाव आया। 1980 में जब उन्होंने सुलभ इंटरनेशनल का नाम सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन किया तो इसका नाम पूरी दुनिया में पहुंच गया। स्वच्छता के साथ डॉक्टर विदेश्वर पाठक ने दलित बच्चों की शिक्षा के लिए पटना, दिल्ली और दूसरी कई जगहों पर स्कूल खोले जिससे स्कैवेंजिंग और निरक्षरता के उन्मूलन में सहायता मिली। समाज के निचले वर्गको लाभान्वित करने के उद्देश्य से उन्होंने महिलाओं और बच्चों को आर्थिक अवसर प्रदान करने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण-केंद्रों की स्थापना की है। सुलभ को अन्तर्राष्ट्रीय गौरव

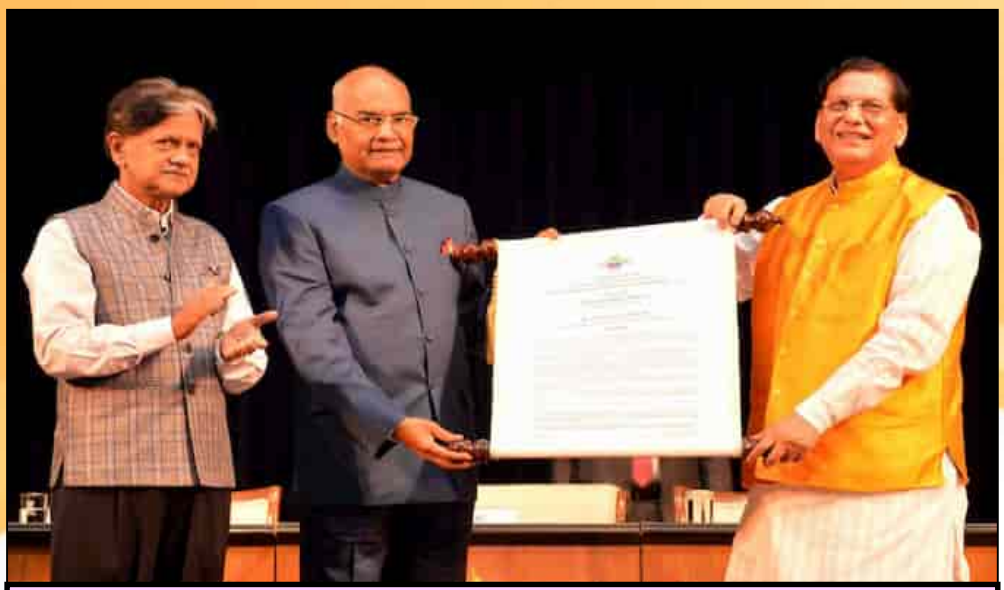

डॉक्टर बिंदेश्वर पाठक राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए

उस समय प्राप्त हुआ जब संयुक्त राष्ट्र संघ की आर्थिक एवं सामाजिक परिषद द्वारा सुलभ इंटरनेशनल को विशेष सलाहकार का दर्जा प्रदान किया गया। उधर संस्थान बुलंदियों पर था और इस दौरान उनकी पढ़ाई भी जारी रही। उन्होंने 1980 में पोस्ट ग्रेजुएशन और 1985 में पटना यूनिवर्सिटी से पीएचडी की। उन्हें 1991 में पद्म भूषण पुरस्कार से नवाजा गया। इसके अलावा भी उन्हें कई सम्मान दिए गए।

उनको एनर्जी ग्लोब, इंदिरा गांधी, स्टॉकहोम वॉटर जैसे तमाम पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। 2009 में इंटरनेशनल अक्षय ऊर्जा संगठन (आईआरईओ) का अक्षय ऊर्जा पुरस्कार भी मिला है।

77 साल के डॉ. बिंदेश्वर पाठक भारत में मैला ढोने की प्रथा के खिलाफ देश में स्वच्छता अभियान में अहम भूमिका निभाई। डॉ. बिंदेश्वर पाठक ने एक सामाजिक कुप्रथा में बदलाव लाकर इसे विकास का जरिया बना दिया। उन्होंने सुलभ शौचालयों से बिना दुर्गंध वाली बायोगैस की खोज की। इस तकनीक का इस्तेमाल भारत समेत अनेक विकासशील राष्ट्रों में किया जा रहा है। सुलभ शौचालयों से निकलने वाले अपशिष्ट का खाद के रूप में इस्तेमाल के लिए उन्होंने प्रोत्साहित किया।

डॉ. बिंदेश्वर पाठक ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सुबह राष्ट्रीय ध्वज फहराया और उसके तुरंत बाद तबीयत खराब होने के उपरांत , उन्हें एम्स, दिल्ली ले जाया गया। हृदय गति का रूक जाने के कारण अस्पताल में उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। इस प्रकार 'टॉयलेट मैन ऑफ इंडिया', इस दुनिया से विदा हो गए।

(संकलन)

जिंदगी

जिंदगी एक अनमोल खजाना है जिसे गुजारते हुए हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। जिंदगी जीना भी एक कला है और एक खूबसूरत एहसास है। हमें हर मोड़ पर जिंदगी का आनंद उठाने एवं उसे हमेशा जिंदादिली से जीने का प्रयास करना चाहिए। हमें मनुष्य जीवन बहुत मुश्किल से मिला है इसलिए जिंदगी को बोझ नहीं समझना है। सुख-दु:ख जिंदगी की दो परछाइयां हैं जो हमेशा साथ-साथ चलती हैं। यहां कुछ भी स्थायी नहीं है। दु:ख भी हमेशा नहीं रहता है और सुख भी हमेसा नही रहता है। दु:ख की अवस्था में सहज और सहनशील रहने का प्रयास करें और उसे पहाड़ जैसा ना समझें। मन में कभी यह ख्याल न आने दें कि ये दु:ख कब जाएगा और यह न सोचें कि जिंदगी खत्म हो गई है।

इसी प्रकार सुख में भी ज्यादा खुश नहीं होना चाहिए। खूबसूरत जिंदगी के लिए अच्छे दोस्तों का होना बहुत जरूरी है। परंतु आज के दौर में अच्छे दोस्त भी मुश्किल से मिलते हैं। मतलब की दोस्ती ज्यादा है। वैसे हमारी दोस्ती भी उसी से होती है जिससे हमारे विचार मिलते हैं। जिंदगी में अच्छे दोस्त मिल जाएं तो जिंदगी का सफर बहुत खुशनुमा हो जाता है जैसे सोने पर सुहागा!

अच्छे जीवन के एवं बेहतर स्वास्थ्य के लिए जिंदगी में अनुशासन का पालन करें। प्रतिदिन सैर करें। समय पर पौष्टिक आहार लें। सकारात्मक विचार अपनाएं। अच्छी पुस्तकें पढ़ें। अच्छे काम करें। मेहनत करें। मन में कभी नकारात्मक विचार न लाएं। ईश्वर ने जो हमें दिया है उसमें संतोष रखें। चेहरे पर सदैव मुस्कान बनाए रखें। अपने मन में दूसरों के प्रति कभी ईर्ष्या, द्वेष, रोष की भावना न लाएं। दूसरों के प्रति नफरत का भाव रखने से हमारे ही स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। प्रेम, नम्रता, सत्कार, सहनशीलता, दया अच्छे व्यक्तित्व की पहचान हैं।

आप स्वयं ही अपने निर्माता हैं। कोई दूसरा आपको अच्छा-बुरा नहीं सिखाएगा। यह सब आपकी विवेकशीलता पर निर्भर करता है। अपने जीवन को सही दिशा आपको ही दिखानी है। सदैव सादगी एवं धैर्य के साथ अपना जीवन व्यतीत करें।

अपने आप को खुश रखें। खुशी हमेशा अपने भीतर ढूंढें। छोटी-छोटी खुशियों से अपने जीवन को खुशहाल बनाएं। व्यक्ति के जीवन में सुख-दु:ख आते–जाते रहते हैं। दु:ख आए तो हिम्मत हारकर नहीं बैठना है बल्कि हिम्मत एवं सूझबूझ के साथ उसका सामना करें। किसी से ज्यादा उम्मीदें एवं इच्छाएं नहीं रखनी चाहिए। इन पर नियंत्रण रखना होगा। सुख आए तो ज्यादा खुश न हों और दुख आने पर घबराएं नही।

हमेशा कोशिश करें कि आप किस प्रकार से दूसरों की सहायता कर सकते हैं। पैसे से आप सब कुछ खरीद सकते हैं, परंतु खुशी नहीं खरीद सकते। जो व्यक्ति इन खूबसूरतियों के साथ जीवन जीते हैं, वह स्वयं भी खुश रहते हैं और दूसरों को भी खुश रखते हैं।

सतविंदर सिंह
उपनिदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

हिमालय

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
साकार, दिव्य, गौरव विराट्,
पौरुष के पुन्जीभूत ज्वाल!
मेरी जननी के हिम-किरीट!
मेरे भारत के दिव्य भाल!
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

युग-युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त,
युग-युग गर्वोन्नत, नित महान,
निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान?
कैसी अखंड यह चिर-समाधि?
यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान?
तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

ओ, मौन, तपस्या-लीन यती!
पल भर को तो कर दृगुन्मेष!
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश।
सुखसिंधु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा, यमुना की अमिय-धार
जिस पुण्यभूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुणा उदार,
जिसके द्वारों पर खड़ा क्रान्त
सीमापति! तू ने की पुकार,
'पद-दलित इसे करना पीछे
पहले ले मेरा सिर उतार।'
उस पुण्यभूमि पर आज तपी!
रे, आन पड़ा संकट कराल,
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे
डस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

कितनी मणियाँ लुट गईं? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष!
तू ध्यान-मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ लिच्छवी-शान कहाँ?
ओ री उदास गण्डकी! बता
विद्यापति कवि के गान कहाँ?
तू तरुण देश से पूछ अरे,
गूँजा कैसा यह ध्वंस-राग?
अम्बुधि-अन्तस्तल-बीच छिपी
यह सुलग रही है कौन आग?
प्राची के प्रांगण-बीच देख,
जल रहा स्वर्ण-युग-अग्निज्वाल,
तू सिंहनाद कर जाग तपी!
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गाण्डीव-गदा,
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें
वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
'हर-हर-बम' का फिर महोच्चार।
ले अंगडाई हिल उठे धरा
कर निज विराट स्वर में निनाद
तू शैलीराट हुँकार भरे
फट जाए कुहा, भागे प्रमाद
तू मौन त्याग, कर सिंहनाद
रे तपी आज तप का न काल
नवयुग-शंखध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग, मेरे विशाल

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) नई दिल्ली